هَلْ تُحِسُّ مِنْهُمْ مِّنْ اَحَدٍ اَوْ تَسْمَعُ لَهُمْ رِكْزًا ﴿٩٨﴾ ع ١٦ ٩ النصف

क्या तुम उन में किसी को देखते हो या उन की भिनक सुनते हो[158]

اٰیاتها ١٣٥ | ٢٠ سُوْرَةُ طٰهٰ مَكِّيَّةٌ ٤٥ | رکوعاتها ٨

सूरए त़ाहा मक्किय्या है, इस में एक सो पैंतीस आयतें और आठ रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

طٰهٰ ﴿١﴾ مَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ لِتَشْقٰٓى ﴿٢﴾ اِلَّا تَذْكِرَةً لِّمَنْ

ऐ महबूब हम ने तुम पर येह क़ुरआन इस लिये न उतारा कि तुम मशक़्क़त में पड़ो[2] हां उस को नसीह़त जो

يَّخْشٰى ﴿٣﴾ تَنْزِيْلًا مِّمَّنْ خَلَقَ الْاَرْضَ وَالسَّمٰوٰتِ الْعُلٰى ﴿٤﴾ اَلرَّحْمٰنُ

डर रखता हो[3] उस का उतारा हुवा जिस ने ज़मीन और ऊंचे आस्मान बनाए वोह बड़ी मेहर (रह़मत) वाला

عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوٰى ﴿٥﴾ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَمَا

उस ने अ़र्श पर इस्तिवा फ़रमाया जैसा उस की शान के लाइक़ है उस का है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में और जो कुछ

بَيْنَهُمَا وَمَا تَحْتَ الثَّرٰى ﴿٦﴾ وَاِنْ تَجْهَرْ بِالْقَوْلِ فَاِنَّهٗ يَعْلَمُ السِّرَّ وَ

इन के बीच में और जो कुछ इस गीली मिट्टी के नीचे है[4] और अगर तू बात पुकार कर कहे तो वोह तो भेद को जानता है और

اَخْفَى ﴿٧﴾ اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ﴿٨﴾ وَهَلْ اَتٰىكَ

उसे जो उस से भी ज़ियादा छुपा है[5] अल्लाह कि उस के सिवा किसी की बन्दगी नहीं उसी के हैं सब अच्छे नाम[6] और कुछ तुम्हें

158 : वोह सब नेस्तो नाबूद (हलाक व बरबाद) कर दिये गए, इसी त़रह़ येह लोग अगर वोही त़रीक़ा इख़्तियार करेंगे तो इन का भी वोही अन्जाम होगा। 1 : सूरए त़ाहा मक्किय्या है। इस में आठ रुकूअ़, एक सो पैंतीस आयतें और एक हज़ार छ[6] सो इक्तालीस कलिमे और पांच हज़ार दो सो बयालीस हुरूफ़ हैं। 2 : और तमाम शब के क़ियाम की तक्लीफ़ उठाओ। **शाने नुज़ूल :** सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم इ़बादत में बहुत जुह्द फ़रमाते थे और तमाम शब क़ियाम में गुज़ारते यहां तक कि क़दमे मुबारक वरम कर आते, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ने ह़ाज़िर हो कर ब हुक्मे इलाही अ़र्ज़ किया कि अपने नफ़्से पाक को कुछ राह़त दीजिये इस का भी ह़क़ है। एक क़ौल येह भी है कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم लोगों के कुफ़्र और उन के ईमान से महरूम रहने पर बहुत ज़ियादा मुतअस्सिफ़ व मुतह़स्सिर (अफ़्सुर्दा) रहते थे और ख़ातिरे मुबारक पर इस सबब से रन्जो मलाल रहा करता था, इस आयत में फ़रमाया गया कि आप रन्जो मलाल की कोफ़्त न उठाएं, क़ुरआने पाक आप की मशक़्क़त के लिये नाज़िल नहीं किया गया है। 3 : वोह इस से नफ़्अ़ उठाएगा और हिदायत पाएगा। 4 : जो सातों ज़मीनों के नीचे है। मुराद येह है कि काएनात में जो कुछ है अ़र्श व समावात, ज़मीन व तह़्तुस्सरा कुछ हो, कहीं हो सब का मालिक अल्लाह है। 5 : "سِر" या'नी भेद वोह है जिस को आदमी रखता और छुपाता है और इस से ज़ियादा पोशीदा वोह है जिस को इन्सान करने वाला है मगर अभी जानता भी नहीं न उस से उस का इरादा मुतअ़ल्लिक़ हुवा न उस तक ख़याल पहुंचा। एक क़ौल येह है कि भेद से मुराद वोह है जिस को इन्सानों से छुपाता है और इस से ज़ियादा छुपी हुई चीज़ वस्वसा है। एक क़ौल येह है कि भेद बन्दे का वोह है जिसे बन्दा ख़ुद जानता है और अल्लाह तआ़ला जानता है, इस से ज़ियादा पोशीदा रब्बानी असरार हैं जिन को अल्लाह जानता है बन्दा नहीं जानता।

www.dawateislami.net

وقف لازم

حَدِیْثُ مُوْسٰی ﴿۹﴾ اِذْ رَاٰ نَارًا فَقَالَ لِاَهْلِهِ امْكُثُوْۤا اِنِّیْۤ اٰنَسْتُ نَارًا

मूसा की ख़बर आई[7] जब उस ने एक आग देखी तो अपनी बीबी से कहा ठहरो मुझे एक आग नज़र पड़ी है

لَّعَلِّیْۤ اٰتِیْكُمْ مِّنْهَا بِقَبَسٍ اَوْ اَجِدُ عَلَى النَّارِ هُدًى ﴿۱۰﴾ فَلَمَّاۤ اَتٰىهَا

शायद मैं तुम्हारे लिये उस में से कोई चिंगारी लाऊं या आग पर रास्ता पाऊं फिर जब आग के पास आया[8]

نُوْدِیَ یٰمُوْسٰی ﴿۱۱﴾ اِنِّیْۤ اَنَا رَبُّكَ فَاخْلَعْ نَعْلَیْكَ ۚ اِنَّكَ بِالْوَادِ

निदा फ़रमाई गई कि ऐ मूसा बेशक मैं तेरा रब हूं तो तू अपने जूते उतार डाल[9] बेशक तू पाक

الْمُقَدَّسِ طُوًى ﴿۱۲﴾ وَ اَنَا اخْتَرْتُكَ فَاسْتَمِعْ لِمَا یُوْحٰی ﴿۱۳﴾ اِنَّنِیْۤ اَنَا اللّٰهُ

जंगल तुवा में है[10] और मैं ने तुझे पसन्द किया[11] अब कान लगा कर सुन जो तुझे वह्य होती है बेशक मैं ही हूं **अल्लाह**

لَاۤ اِلٰهَ اِلَّاۤ اَنَا فَاعْبُدْنِیْ ۙ وَ اَقِمِ الصَّلٰوةَ لِذِكْرِیْ ﴿۱۴﴾ اِنَّ السَّاعَةَ

कि मेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं तो मेरी बन्दगी कर और मेरी याद के लिये नमाज़ क़ाइम रख[12] बेशक क़ियामत आने

اٰتِیَةٌ اَكَادُ اُخْفِیْهَا لِتُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍۭ بِمَا تَسْعٰى ﴿۱۵﴾ فَلَا یَصُدَّنَّكَ عَنْهَا

वाली है क़रीब था कि मैं उसे सब से छुपाऊं[13] कि हर जान अपनी कोशिश का बदला पाए[14] तो हरगिज़ तुझे[15] इस के मानने से वोह

आयत में तम्बीह है कि आदमी को क़बाएह़ अफ़्आ़ल से परहेज़ करना चाहिये वोह ज़ाहिरा हों या बातिना क्यूं कि **अल्लाह** तआ़ला से कुछ छुपा नहीं और इस में नेक आ'माल पर तरग़ीब भी है कि त़ाअ़त ज़ाहिर हो या बातिन **अल्लाह** से छुपी नहीं वोह जज़ा अ़ता फ़रमाएगा। तफ़्सीरे बैज़ावी में "क़ौल" से ज़िक्रे इलाही और दुआ़ मुराद ली है और फ़रमाया है कि इस आयत में इस पर तम्बीह की गई है कि ज़िक्रो दुआ़ में जह्र (बुलन्द आवाज़ करना) **अल्लाह** तआ़ला को सुनाने के लिये नहीं है बल्कि ज़िक्र को नफ़्स में रासिख़ करने और नफ़्स को ग़ैर के साथ मश्ग़ूली से रोकने और बाज़ रखने के लिये है। **6 :** वोह वाहिद बिज़्ज़ात है और अस्मा व सिफ़ात इ़बारात हैं और ज़ाहिर है कि तअ़द्दुदे इ़बारात तअ़द्दुदे मा'ना को मुक़्तज़ी नहीं। **7 :** ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के अह़वाल का बयान फ़रमाया गया ताकि मा'लूम हो कि अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام जो दरजए उ़ल्या पाते हैं वोह अदाए फ़राइज़े नुबुव्वत व रिसालत में किस क़दर मशक़्क़तें बरदाश्त करते और कैसे कैसे शदाइद पर सब्र फ़रमाते हैं। यहां ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के उस सफ़र का वाक़िआ़ बयान फ़रमाया जाता है जिस में आप मद्यन से मिस्र की त़रफ़ ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से इजाज़त ले कर अपनी वालिदए माजिदा से मिलने के लिये रवाना हुए थे, आप के अहले बैत हमराह थे और आप ने बादशाहाने शाम के अन्देशे से सड़क छोड़ कर जंगल में क़त़्ए मसाफ़त इख़्तियार फ़रमाई, बीबी साह़िबा ह़ामिला थीं चलते चलते तूर के ग़र्बी जानिब पहुंचे, यहां रात के वक़्त बीबी साहिबा को दर्दे ज़ेह शुरूअ़ हुवा, येह रात अंधेरी थी, बर्फ़ पड़ रही थी, सर्दी शिद्दत की थी, आप को दूर से आग मा'लूम हुई **8 :** वहां एक दरख़्त सर सब्ज़ो शादाब देखा जो ऊपर से नीचे तक निहायत रोशन था, जितना उस के क़रीब जाते हैं दूर होता है, जब ठहर जाते हैं क़रीब होता है, उस वक़्त आप को **9 :** कि इस में तवाज़ोअ़ और बुक़्अ़ए मुअ़ज़्ज़मा का एह़तिराम और वादिये मुक़द्दस की ख़ाक से ह़ुसूले बरकत का मौक़अ़ है। **10 :** "तुवा" वादिये मुक़द्दस का नाम है जहां येह वाक़िआ़ पेश आया। **11 :** तेरी क़ौम में से नुबुव्वत व रिसालत व शरफ़े कलाम के साथ मुशर्रफ़ फ़रमाया, येह निदा ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अपने हर जुज़्वे बदन से सुनी और क़ुव्वते सामिआ़ ऐसी आ़म हुई कि तमाम जिस्मे अक़्दस कान बन गया। سُبْحٰنَ اللّٰه। **12 :** ताकि तू उस में मुझे याद करे और मेरी याद में इख़्लास और मेरी रिज़ा मक़्सूद हो, कोई दूसरी ग़रज़ न हो, इसी त़रह़ रिया का दख़्ल न हो या येह मा'ना हैं कि तू मेरी नमाज़ क़ाइम रख ताकि मैं तुझे अपनी रह़मत से याद फ़रमाऊं। **फ़ाएदा :** इस से मा'लूम हुवा कि ईमान के बा'द आ'ज़मे फ़राइज़ नमाज़ है। **13 :** और बन्दों को उस के आने की ख़बर न दूं और उस के आने की ख़बर न दी जाती अगर इस ख़बर देने में येह ह़िक्मत न होती **14 :** और उस के ख़ौफ़ से मआ़सी तर्क करे नेकियां ज़ियादा करे और हर वक़्त तौबा करता रहे। **15 :** ऐ उम्मते मूसा ! ख़ित़ाब ब ज़ाहिर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को है और मुराद इस से आप की उम्मत है। (مدارک)

www.dawateislami.net

مَنْ لَّا يُؤْمِنُ بِهَا وَ اتَّبَعَ هَوٰىهُ فَتَرْدٰى ﴿۱۶﴾ وَ مَا تِلْكَ بِيَمِيْنِكَ

बाज़ न रखे जो इस पर ईमान नहीं लाता और अपनी ख़्वाहिश के पीछे चला[16] फिर तो हलाक हो जाए और येह तेरे दाहने हाथ में क्या है

يٰمُوْسٰى ﴿۱۷﴾ قَالَ هِیَ عَصَایَ ۚ اَتَوَكَّؤُا عَلَیْهَا وَ اَهُشُّ بِهَا عَلٰى غَنَمِیْ وَ

ऐ मूसा[17] अ़र्ज़ की येह मेरा अ़सा है[18] मैं इस पर तक्या (टेक व सहारा) लगाता हूं और इस से अपनी बकरियों पर पत्ते झाड़ता हूं और

لِیَ فِیْهَا مَاٰرِبُ اُخْرٰى ﴿۱۸﴾ قَالَ اَلْقِهَا یٰمُوْسٰى ﴿۱۹﴾ فَاَلْقٰىهَا فَاِذَا هِیَ حَیَّةٌ

मेरे इस में और काम हैं[19] फ़रमाया इसे डाल दे ऐ मूसा तो मूसा ने उसे डाल दिया तो जभी वोह दौड़ता हुवा

تَسْعٰى ﴿۲۰﴾ قَالَ خُذْهَا وَ لَا تَخَفْ ٙ وقفة سَنُعِیْدُهَا سِیْرَتَهَا الْاُوْلٰى ﴿۲۱﴾ وَ

सांप हो गया[20] फ़रमाया इसे उठा ले और डर नहीं अब हम इसे फिर पहली त़रह़ कर देंगे[21] और

اضْمُمْ یَدَكَ اِلٰى جَنَاحِكَ تَخْرُجْ بَیْضَآءَ مِنْ غَیْرِ سُوْٓءٍ اٰیَةً اُخْرٰى ﴿۲۲﴾ لا

अपना हाथ अपने बाज़ू से मिला[22] ख़ूब सपेद निकलेगा बे किसी मरज़ के[23] एक और निशानी[24]

لِنُرِیَكَ مِنْ اٰیٰتِنَا الْكُبْرٰى ﴿۲۳﴾ ج اِذْهَبْ اِلٰى فِرْعَوْنَ اِنَّهٗ طَغٰى ﴿۲۴﴾ ع قَالَ ع ۲۴ ۱۰

कि हम तुझे अपनी बड़ी बड़ी निशानियां दिखाएं फ़िरऔ़न के पास जा[25] उस ने सर उठाया[26] अ़र्ज़ की

رَبِّ اشْرَحْ لِیْ صَدْرِیْ ﴿۲۵﴾ لا وَ یَسِّرْ لِیْۤ اَمْرِیْ ﴿۲۶﴾ لا وَ احْلُلْ عُقْدَةً مِّنْ

ऐ मेरे रब मेरे लिये मेरा सीना खोल दे[27] और मेरे लिये मेरा काम आसान कर और मेरी ज़बान की

16 : अगर तू उस का कहना माने और क़ियामत पर ईमान न लाए तो **17 :** इस सुवाल की हिक्मत येह है कि ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام अपने अ़सा को देख लें और येह बात क़ल्ब में ख़ूब रासिख़ हो जाए कि येह अ़सा है ताकि जिस वक़्त वोह सांप की शक्ल में हो तो आप के ख़ात़िरे मुबारक पर कोई परेशानी न हो या येह हिक्मत है कि ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को मानूस किया जाए ताकि हैबते मुकालमत (**अल्लाह** तआ़ला से हम कलामी करते हुए रो'ब व दहशत) का असर कम हो (مدارک وغیرہ) **18 :** इस अ़सा में ऊपर की जानिब दो शाख़ें थीं और उस का नाम नब्आ़ था। **19 :** मिस्ल तोशा और पानी उठाने और मूज़ी जानवरों को दफ़्अ़ करने और आ'दा से मुह़ारबा में काम लेने वग़ैरा के, इन फ़वाइद का ज़िक्र करना ब त़रीक़े शुक्रे नेअ़मे इलाहिय्यह था। **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام से **20 :** और क़ुदरते इलाही दिखाई गई कि जो अ़सा हाथ में रहता था और इतने कामों में आता था अब अचानक वोह ऐसा हैबतनाक अज़्दहा बन गया। येह ह़ाल देख कर ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को ख़ौफ़ हुवा तो **अल्लाह** तआ़ला ने उन से **21 :** येह फ़रमाते ही ख़ौफ़ जाता रहा ह़त्ता कि आप ने अपना दस्ते मुबारक उस के मुंह में डाल दिया और वोह आप के हाथ लगाते ही मिस्ले साबिक़ अ़सा बन गया, अब उस के बा'द एक और मो'जिज़ा अ़त़ा फ़रमाया जिस की निस्बत इर्शाद फ़रमाया : **22 :** या'नी कफ़े दस्ते रास्त (सीधे हाथ की हथेली) बाएं बाज़ू से बग़ल के नीचे मिला कर निकालिये तो आफ़्ताब की त़रह़ चमकता निगाहों को ख़ीरा करता (चुंधयाता हुवा) और **23 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के दस्ते मुबारक से रात व दिन में आफ़्ताब की त़रह़ नूर ज़ाहिर होता था और येह मो'जिज़ा आप के आ'ज़म मो'जिज़ात में से है, जब आप दोबारा अपना दस्ते मुबारक बग़ल के नीचे रख कर बाज़ू से मिलाते तो वोह दस्ते अक़्दस ह़ालते साबिक़ा पर आ जाता। **24 :** आप के सिद्क़े नुबुव्वत की अ़सा के बा'द इस निशानी को भी लीजिये। **25 :** रसूल हो कर **26 :** और कुफ़्र में ह़द से गुज़र गया और उलूहिय्यत का दा'वा करने लगा। **27 :** और इसे तह़म्मुले रिसालत के लिये वसीअ़ फ़रमा दे।

www.dawateislami.net

لِّسَانِیۡ ﴿۲۷﴾ یَفۡقَهُوۡا قَوۡلِیۡ ﴿۲۸﴾ وَاجۡعَلۡ لِّیۡ وَزِیۡرًا مِّنۡ اَهۡلِیۡ ﴿۲۹﴾ هٰرُوۡنَ

गिरह खोल दे[28] कि वोह मेरी बात समझें और मेरे लिये मेरे घर वालों में से एक वज़ीर कर दे[29] वोह कौन मेरा

اَخِیۡ ﴿۳۰﴾ اشۡدُدۡ بِهٖۤ اَزۡرِیۡ ﴿۳۱﴾ وَاَشۡرِكۡهُ فِیۡۤ اَمۡرِیۡ ﴿۳۲﴾ كَیۡ نُسَبِّحَكَ

भाई हारून उस से मेरी कमर मज़बूत कर और उसे मेरे काम में शरीक कर[30] कि हम ब कसरत तेरी

كَثِیۡرًا ﴿۳۳﴾ وَّنَذۡكُرَكَ كَثِیۡرًا ﴿۳۴﴾ اِنَّكَ كُنۡتَ بِنَا بَصِیۡرًا ﴿۳۵﴾ قَالَ قَدۡ اُوۡتِیۡتَ

पाकी बोलें और ब कसरत तेरी याद करें[31] बेशक तू हमें देख रहा है[32] फ़रमाया ऐ मूसा तेरी मांग

سُؤۡلَكَ یٰمُوۡسٰی ﴿۳۶﴾ وَلَقَدۡ مَنَنَّا عَلَیۡكَ مَرَّةً اُخۡرٰۤی ﴿۳۷﴾ اِذۡ اَوۡحَیۡنَاۤ

तुझे अ़ता हुई और बेशक हम ने[33] तुझ पर एक बार और एहसान फ़रमाया जब हम ने तेरी

اِلٰۤی اُمِّكَ مَا یُوۡحٰۤی ﴿۳۸﴾ اَنِ اقۡذِفِیۡهِ فِی التَّابُوۡتِ فَاقۡذِفِیۡهِ فِی الۡیَمِّ

मां को इल्हाम किया जो इल्हाम करना था[34] कि इस बच्चे को सन्दूक़ में रख कर दरिया में[35] डाल दे

فَلۡیُلۡقِهِ الۡیَمُّ بِالسَّاحِلِ یَاۡخُذۡهُ عَدُوٌّ لِّیۡ وَعَدُوٌّ لَّهٗ ؕ وَاَلۡقَیۡتُ عَلَیۡكَ

तो दरिया इसे किनारे पर डाले कि इसे वोह उठा ले जो मेरा दुश्मन और इस का दुश्मन[36] और मैं ने तुझ पर अपनी

مَحَبَّةً مِّنِّیۡ ۚ وَلِتُصۡنَعَ عَلٰی عَیۡنِیۡ ﴿۳۹﴾ اِذۡ تَمۡشِیۡۤ اُخۡتُكَ فَتَقُوۡلُ هَلۡ

وقف لازم

तरफ़ की महब्बत डाली[37] और इस लिये कि तू मेरी निगाह के सामने तय्यार हो[38] तेरी बहन चली[39] फिर कहा क्या

28 : जो ख़ुर्द साली (बचपन) में आग का अंगारा मुंह में रख लेने से पड़ गई है और इस का वाक़िआ़ येह था कि बचपन में आप एक रोज़ फ़िरऔ़न की गोद में थे आप ने उस की दाढ़ी पकड़ कर उस के मुंह पर ज़ोर से तमांचा मारा, इस पर उसे ग़ुस्सा आया और उस ने आप के क़त्ल का इरादा किया। आसिया ने कहा कि ऐ बादशाह येह नादान बच्चा है क्या समझे ? तू चाहे तो तजरिबा कर ले ! इस तजरिबे के लिये एक त़श्त में आग और एक त़श्त में याक़ूते सुर्ख़ आप के सामने पेश किये गए, आप ने याक़ूत लेना चाहा मगर फ़िरिश्ते ने आप का हाथ अंगारे पर रख दिया और वोह अंगारा आप के मुंह में दे दिया, इस से ज़बाने मुबारक जल गई और लुक्नत पैदा हो गई, इस के लिये आप ने येह दुआ़ की। **29 :** जो मेरा मुआ़विन व मो'तमद हो। **30 :** या'नी अम्रे नुबुव्वत व तब्लीग़े रिसालत में। **31 :** नमाज़ों में भी और ख़ारिजे नमाज़ भी। **32 :** हमारे अह़वाल का आ़लिम है। ह़ज़रते मूसा عَلَیۡهِ السَّلَام की इस दरख़्वास्त पर **अल्लाह** तआ़ला ने **33 :** इस से क़ब्ल **34 :** दिल में डाल कर या ख़्वाब के ज़रीए से, जब कि उन्हें आप की विलादत के वक़्त फ़िरऔ़न की त़रफ़ से आप को क़त्ल कर डालने का अन्देशा हुवा। **35 :** या'नी नील में **36 :** या'नी फ़िरऔ़न। चुनान्चे ह़ज़रते मूसा عَلَیۡهِ السَّلَام की वालिदा ने एक सन्दूक़ बनाया और उस में रूई बिछाई और ह़ज़रते मूसा عَلَیۡهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को उस में रख कर सन्दूक़ बन्द कर दिया और उस की दरज़ें (झिरयां) रोग़ने क़ीर (तारकोल) से बन्द कर दीं आप उस सन्दूक़ के अन्दर पानी में पहुंचे, फिर उस सन्दूक़ को दरियाए नील में बहा दिया, इस दरिया से एक बड़ी नह्र निकल कर फ़िरऔ़न के महल में गुज़रती थी, फ़िरऔ़न मअ़ अपनी बीबी आसिया के नह्र के किनारे बैठा था, नह्र में सन्दूक़ आता देख कर उस ने ग़ुलामों और कनीज़ों को उस के निकालने का ह़ुक्म दिया। वोह सन्दूक़ निकाल कर सामने लाया गया, खोला तो उस में एक नूरानी शक्ल फ़रज़न्द जिस की पेशानी से वजाहत व इक़्बाल के आसार नुमूदार थे नज़र आया, देखते ही फ़िरऔ़न के दिल में ऐसी महब्बत पैदा हुई कि वोह वारफ़्ता हो गया और अ़क़्ल व ह़वास बजा न रहे, अपने इख़्तियार से बाहर हो गया, इस की निस्बत **अल्लाह** तबारक व तआ़ला फ़रमाता है **: 37 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا ने फ़रमाया कि **अल्लाह** तआ़ला ने उन्हें महबूब बनाया और ख़ल्क़ का महबूब कर दिया और जिस को **अल्लाह** तबारक व तआ़ला अपनी महबूबिय्यत से नवाज़ता है क़ुलूब में उस की महब्बत पैदा हो जाती है, जैसा कि ह़दीस शरीफ़ में वारिद हुवा, येही ह़ाल ह़ज़रते मूसा عَلَیۡهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का था जो आप को देखता था उसी के दिल में आप की महब्बत पैदा हो जाती थी। क़तादा ने कहा कि ह़ज़रते

www.dawateislami.net

اَدُلُّكُمۡ عَلٰى مَنۡ يَّكۡفُلُهٗ ؕ فَرَجَعۡنٰكَ اِلٰٓى اُمِّكَ كَىۡ تَقَرَّ عَيۡنُهَا وَلَا تَحۡزَنَ ؕ

मैं तुम्हें वोह लोग बता दूं जो इस बच्चे की परवरिश करें[40] तो हम तुझे तेरी मां के पास फेर लाए कि उस की आंख[41] ठन्डी हो और ग़म न करे[42]

وَقَتَلۡتَ نَفۡسًا فَنَجَّيۡنٰكَ مِنَ الۡغَمِّ وَفَتَنّٰكَ فُتُوۡنًا ۟ فَلَبِثۡتَ سِنِيۡنَ

और तू ने एक जान को क़त्ल किया[43] तो हम ने तुझे ग़म से नजात दी और तुझे ख़ूब जांच लिया[44] तो तू कई बरस

فِىۡۤ اَهۡلِ مَدۡيَنَ ۙ ثُمَّ جِئۡتَ عَلٰى قَدَرٍ يّٰمُوۡسٰى ﴿۴۰﴾ وَاصۡطَنَعۡتُكَ

मद्यन वालों में रहा[45] फिर तू एक ठहराए वा'दे पर हाज़िर हुवा ऐ मूसा[46] और मैं ने तुझे ख़ास

لِنَفۡسِىۡ ﴿۴۱﴾ اِذۡهَبۡ اَنۡتَ وَاَخُوۡكَ بِاٰيٰتِىۡ وَلَا تَنِيَا فِىۡ ذِكۡرِىۡ ﴿۴۲﴾ اِذۡهَبَاۤ

अपने लिये बनाया[47] तू और तेरा भाई दोनों मेरी निशानियां[48] ले कर जाओ और मेरी याद में सुस्ती न करना दोनों

اِلٰى فِرۡعَوۡنَ اِنَّهٗ طَغٰى ﴿۴۳﴾ فَقُوۡلَا لَهٗ قَوۡلًا لَّيِّنًا لَّعَلَّهٗ يَتَذَكَّرُ اَوۡ

फ़िरऔ़न के पास जाओ बेशक उस ने सर उठाया तो उस से नर्म बात कहना[49] इस उम्मीद पर कि वोह ध्यान करे या

يَخۡشٰى ﴿۴۴﴾ قَالَا رَبَّنَاۤ اِنَّنَا نَخَافُ اَنۡ يَّفۡرُطَ عَلَيۡنَاۤ اَوۡ اَنۡ يَّطۡغٰى ﴿۴۵﴾

कुछ डरे[50] दोनों ने अ़र्ज़ किया ऐ हमारे रब बेशक हम डरते हैं कि वोह हम पर ज़ियादती करे या शरारत से पेश आए

मूसा عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की आंखों में ऐसी मलाहत थी जिसे देख कर हर देखने वाले के दिल में महब्बत जोश मारने लगती थी। **38 :** या'नी मेरी हिफ़ाज़त व निगहबानी में परवरिश पाए। **39 :** जिस का नाम मरयम था ताकि वोह आप के हाल का तजस्सुस करे और मा'लूम करे कि सन्दूक़ कहां पहुंचा ? आप किस के हाथ आए ? जब उस ने देखा कि सन्दूक़ फ़िरऔ़न के पास पहुंचा और वहां दूध पिलाने के लिये दाइयां हाज़िर की गईं और आप ने किसी की छाती को मुंह न लगाया तो आप की बहन ने **40 :** उन लोगों ने इस को मन्ज़ूर किया, वोह अपनी वालिदा को ले गईं, आप ने उन का दूध क़बूल फ़रमाया। **41 :** आप के दीदार से **42 :** या'नी ग़मे फ़िराक़ दूर हो। इस के बा'द हज़रते मूसा عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के एक और वाक़िए का ज़िक्र फ़रमाया जाता है **43 :** हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا ने फ़रमाया कि हज़रते मूसा عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़िरऔ़न की क़ौम के एक काफ़िर को मारा था वोह मर गया, कहा गया है कि उस वक़्त आप की उम्र शरीफ़ बारह साल की थी, इस वाक़िए पर आप को फ़िरऔ़न की तरफ़ से अन्देशा हुवा। **44 :** मेहनतों में डाल कर और उन से ख़लासी अ़ता फ़रमा कर। **45 :** मद्यन एक शहर है मिस्र से आठ मन्ज़िल फ़ासिले पर, यहां हज़रते शुऐ़ब عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام रहते थे, हज़रते मूसा عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام मिस्र से मद्यन आए और कई बरस तक हज़रते शुऐ़ब عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के पास इक़ामत फ़रमाई और उन की साहिब ज़ादी सफ़ूरा के साथ आप का निकाह हुवा। **46 :** या'नी अपनी उम्र के चालीसवें साल, और येह वोह सिन है कि अम्बिया की तरफ़ इस सिन में वह्य की जाती है। **47 :** अपनी वह्य और रिसालत के लिये ताकि तू मेरे इरादे और मेरी महब्बत पर तसर्रुफ़ करे और मेरी हुज्जत पर क़ाइम रहे और मेरे और मेरी ख़ल्क़ के दरमियान ख़िताब पहुंचाने वाला हो। **48 :** या'नी मो'जिज़ात **49 :** या'नी उस को ब नरमी नसीहत फ़रमाना और नरमी का हुक्म इस लिये था कि उस ने बचपन में आप की ख़िदमत की थी और बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि नरमी से मुराद येह है कि आप उस से वा'दा करें कि अगर वोह ईमान क़बूल करेगा तो तमाम उम्र जवान रहेगा कभी बुढ़ापा न आएगा और मरते दम तक उस की सल्तनत बाक़ी रहेगी और खाने पीने और निकाह की लज़्ज़तें ता दमे मर्ग बाक़ी रहेंगी और बा'दे मौत दुख़ूले जन्नत मुयस्सर आएगा। जब हज़रते मूसा عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़िरऔ़न से येह वा'दे किये तो उस को येह बात बहुत पसन्द आई लेकिन वोह किसी काम पर बिग़ैर मश्वरए हामान के क़त्ई फ़ैसला नहीं करता था, हामान मौजूद न था जब वोह आया तो फ़िरऔ़न ने उस को येह ख़बर दी और कहा कि मैं चाहता हूं कि हज़रते मूसा عَلَيۡهِ السَّلَام की हिदायत पर ईमान क़बूल कर लूं। हामान कहने लगा : मैं तो तुझ को आक़िल व दाना समझता था ! तू रब है, बन्दा बना चाहता है ! तू मा'बूद है, आबिद बनने की ख़्वाहिश करता है ! फ़िरऔ़न ने कहा : तू ने ठीक कहा और हज़रते हारून عَلَيۡهِ السَّلَام मिस्र में थे, अल्लाह तआ़ला ने हज़रते मूसा عَلَيۡهِ السَّلَام को हुक्म किया कि वोह हज़रते हारून के पास आएं और हज़रते हारून عَلَيۡهِ السَّلَام को वह्य की, कि हज़रते मूसा عَلَيۡهِ السَّلَام से मिलें। चुनान्चे वोह एक मन्ज़िल चल कर आप से मिले और जो वह्य उन्हें हुई थी उस की हज़रते मूसा عَلَيۡهِ السَّلَام को इत्तिलाअ़ दी। **50 :** या'नी आप की ता'लीम व नसीहत इस उम्मीद के साथ होनी चाहिये ताकि आप के लिये अज्र और उस पर इल्ज़ामे हुज्जत और

www.dawateislami.net

قَالَ لَا تَخَافَآ اِنَّنِیۡ مَعَکُمَآ اَسۡمَعُ وَاَرٰی ﴿۴۶﴾ فَاۡتِیٰهُ فَقُوۡلَاۤ اِنَّا رَسُوۡلَا

फ़रमाया डरो नहीं मैं तुम्हारे साथ हूं[51] सुनता और देखता[52] तो उस के पास जाओ और उस से कहो कि हम तेरे रब

رَبِّكَ فَاَرۡسِلۡ مَعَنَا بَنِیۡۤ اِسۡرَآءِیۡلَ ۬ؕ وَلَا تُعَذِّبۡهُمۡ ؕ قَدۡ جِئۡنٰكَ

के भेजे हुए हैं तो औलादे या'क़ूब को हमारे साथ छोड़ दे[53] और उन्हें तक्लीफ़ न दे[54] बेशक हम तेरे पास

بِاٰیَةٍ مِّنۡ رَّبِّكَ ؕ وَالسَّلٰمُ عَلٰی مَنِ اتَّبَعَ الۡهُدٰی ﴿۴۷﴾ اِنَّا قَدۡ اُوۡحِیَ اِلَیۡنَاۤ

तेरे रब की त़रफ़ से निशानी लाए हैं[55] और सलामती उसे जो हिदायत की पैरवी करे[56] बेशक हमारी त़रफ़ वह्य हुई है

اَنَّ الۡعَذَابَ عَلٰی مَنۡ كَذَّبَ وَتَوَلّٰی ﴿۴۸﴾ قَالَ فَمَنۡ رَّبُّكُمَا یٰمُوۡسٰی ﴿۴۹﴾

कि अ़ज़ाब उस पर है जो झुटलाए[57] और मुंह फेरे[58] बोला तो तुम दोनों का ख़ुदा कौन है ऐ मूसा

قَالَ رَبُّنَا الَّذِیۡۤ اَعۡطٰی كُلَّ شَیۡءٍ خَلۡقَهٗ ثُمَّ هَدٰی ﴿۵۰﴾ قَالَ فَمَا بَالُ

कहा हमारा रब वोह है जिस ने हर चीज़ को उस के लाइक़ सूरत दी[59] फिर राह दिखाई[60] बोला[61] अगली संगतों

الۡقُرُوۡنِ الۡاُوۡلٰی ﴿۵۱﴾ قَالَ عِلۡمُهَا عِنۡدَ رَبِّیۡ فِیۡ كِتٰبٍ ۚ لَا یَضِلُّ رَبِّیۡ

का क्या ह़ाल है[62] कहा उन का इ़ल्म मेरे रब के पास एक किताब में है[63] मेरा रब न बहके

وَلَا یَنۡسَی ﴿۵۲﴾ الَّذِیۡ جَعَلَ لَكُمُ الۡاَرۡضَ مَهۡدًا وَّسَلَكَ لَكُمۡ فِیۡهَا سُبُلًا

न भूले वोह जिस ने तुम्हारे लिये ज़मीन को बिछौना किया और तुम्हारे लिये इस में चलती राहें रखीं

وَّاَنۡزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ؕ فَاَخۡرَجۡنَا بِهٖۤ اَزۡوَاجًا مِّنۡ نَّبَاتٍ شَتّٰی ﴿۵۳﴾

और आस्मान से पानी उतारा[64] तो हम ने उस से त़रह़ त़रह़ के सब्ज़े के जोड़े निकाले[65]

क़त्ए़ उ़ज़्र हो जाए और ह़क़ीक़त में होना तो वोही है जो तक़्दीरे इलाही है। **51 :** अपनी मदद से **52 :** उस के क़ौल व फ़े'ल को **53 :** और उन्हें बन्दगी व असीरी से रिहा कर दे **54 :** मेह़नत व मशक़्क़त के सख़्त काम ले कर। **55 :** या'नी मो'जिज़े जो हमारे सिद्क़े नुबुव्वत की दलील हैं। फ़िरऔ़न ने कहा : वोह क्या हैं ? तो आप ने मो'जिज़ए यदे बैज़ा (सूरज की त़रह़ हाथ चमकने का मो'जिज़ा) दिखाया। **56 :** या'नी दोनों जहान में उस के लिये सलामती है वोह अ़ज़ाब से महफ़ूज़ रहेगा। **57 :** हमारी नुबुव्वत को और उन अह़काम को जो हम लाए। **58 :** हमारी हिदायत से। ह़ज़रते मूसा व ह़ज़रते हारून عَلَیۡهِمَا السَّلَام ने फ़िरऔ़न को येह पैग़ाम पहुंचा दिया तो वोह **59 :** हाथ को इस के लाइक़ ऐसी कि किसी चीज़ को पकड़ सके, पाउं को इस के क़ाबिल कि चल सके, ज़बान को इस के मुनासिब कि बोल सके, आंख को इस के मुवाफ़िक़ कि देख सके, कान को ऐसी कि सुन सके। **60 :** और इस की मा'रिफ़त दी कि दुन्या की ज़िन्दगानी और आख़िरत की सआ़दत के लिये **अल्लाह** की अ़त़ा की हुई ने'मतों को किस त़रह़ काम में लाया जाए। **61 :** फ़िरऔ़न **62 :** या'नी जो उम्मतें गुज़र चुकी हैं मिस्ल क़ौमे नूह़ व आ़द व समूद के जो बुतों को पूजते थे और बअ़्से बा'दल मौत या'नी मरने के बा'द ज़िन्दा कर के उठाए जाने के मुन्किर थे, इस पर ह़ज़रते मूसा عَلَیۡهِ السَّلَام ने **63 :** या'नी लौह़े महफ़ूज़ में उन के तमाम अह़वाल मक्तूब हैं, रोज़े क़ियामत उन्हें इन आ'माल पर जज़ा दी जाएगी। **64 :** ह़ज़रते मूसा عَلَیۡهِ السَّلَام का कलाम तो यहां तमाम हो गया अब **अल्लाह** तआ़ला अहले मक्का को ख़ित़ाब कर के इस की तत्मीम फ़रमाता है **65 :** या'नी क़िस्म क़िस्म के सब्ज़े मुख़्तलिफ़ रंगतों ख़ुश्बूओं शक्लों के, बा'ज़ आदमियों के लिये बा'ज़ जानवरों के लिये।

www.dawateislami.net

ع ٢

كُلُوْا وَارْعَوْا اَنْعَامَكُمْ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّاُولِي النُّهٰى ﴿٥٤﴾ مِنْهَا

तुम खाओ और अपने मवेशियों को चराओ[66] बेशक इस में निशानियां हैं अ़क्ल वालों को हम ने ज़मीन

خَلَقْنٰكُمْ وَفِيْهَا نُعِيْدُكُمْ وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً اُخْرٰى ﴿٥٥﴾ وَلَقَدْ

ही से तुम्हें बनाया[67] और इसी में तुम्हें फिर ले जाएंगे[68] और इसी से तुम्हें दोबारा निकालेंगे[69] और बेशक हम

اَرَيْنٰهُ اٰيٰتِنَا كُلَّهَا فَكَذَّبَ وَاَبٰى ﴿٥٦﴾ قَالَ اَجِئْتَنَا لِتُخْرِجَنَا مِنْ اَرْضِنَا

ने उसे[70] अपनी सब निशानियां[71] दिखाईं तो उस ने झुटलाया और न माना[72] बोला क्या तुम हमारे पास इस लिये आए हो कि हमें अपने जादू के सबब हमारी

بِسِحْرِكَ يٰمُوْسٰى ﴿٥٧﴾ فَلَنَاْتِيَنَّكَ بِسِحْرٍ مِّثْلِهٖ فَاجْعَلْ بَيْنَنَا وَبَيْنَكَ

ज़मीन से निकाल दो ऐ मूसा[73] तो ज़रूर हम भी तुम्हारे आगे वैसा ही जादू लाएंगे[74] तो हम में और अपने में एक

مَوْعِدًا لَّا نُخْلِفُهٗ نَحْنُ وَلَاۤ اَنْتَ مَكَانًا سُوًى ﴿٥٨﴾ قَالَ مَوْعِدُكُمْ

वा'दा ठहरा दो जिस से न हम बदला लें (आगे पीछे हों) न तुम हमवार जगह हो मूसा ने कहा तुम्हारा वा'दा

يَوْمُ الزِّيْنَةِ وَاَنْ يُّحْشَرَ النَّاسُ ضُحًى ﴿٥٩﴾ فَتَوَلّٰى فِرْعَوْنُ فَجَمَعَ كَيْدَهٗ

मेले का दिन है[75] और येह कि लोग दिन चढ़े जम्अ़ किये जाएं[76] तो फ़िरऔ़न फिरा और अपने दाउं (मक्रो फ़रेब) इकठ्ठे किये[77]

ثُمَّ اَتٰى ﴿٦٠﴾ قَالَ لَهُمْ مُّوْسٰى وَيْلَكُمْ لَا تَفْتَرُوْا عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا فَيُسْحِتَكُمْ

फिर आया[78] उन से मूसा ने कहा तुम्हें ख़राबी हो **अल्लाह** पर झूट न बांधो[79] कि वोह तुम्हें अ़ज़ाब

بِعَذَابٍ ۚ وَقَدْ خَابَ مَنِ افْتَرٰى ﴿٦١﴾ فَتَنَازَعُوْۤا اَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ وَاَسَرُّوا

से हलाक कर दे और बेशक ना मुराद रहा जिस ने झूट बांधा[80] तो अपने मुआ़मले में बाहम मुख़्तलिफ़ हो गए[81] और छुप कर

66 : येह अम्रे इबाह़त और तज़्कीरे ने'मत के लिये है या'नी हम ने येह सब्ज़े निकाले तुम्हारे लिये इन का खाना और अपने जानवरों को चराना मुबाह़ कर के। **67 :** तुम्हारे जद्दे आ'ला ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام को इस से पैदा कर के। **68 :** तुम्हारी मौत व दफ़्न के वक़्त **69 :** रोज़े क़ियामत। **70 :** या'नी फ़िरऔ़न को **71 :** या'नी कुल आयाते तिस्अ़ (नव निशानियां) जो ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को अ़त़ा फ़रमाई थीं। **72 :** और उन आयात को सेह़्र बताया और क़बूले ह़क़ से इन्कार किया और **73 :** या'नी हमें मिस्र से निकाल कर ख़ुद इस पर क़ब्ज़ा करो और बादशाह बन जाओ। **74 :** और जादू में हमारा और तुम्हारा मुक़ाबला होगा **75 :** इस मेले से फ़िरऔ़नियों का मेला मुराद है जो उन की ई़द थी और उस में वोह ज़ीनतें कर कर के जम्अ़ होते थे। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि येह दिन आ़शूरा या'नी दसवीं मुह़र्रम था और उस साल येह तारीख़ सनीचर को वाक़ेअ़ हुई थी। इस रोज़ को ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने इस लिये मुअ़य्यन फ़रमाया कि येह रोज़ उन की ग़ायते शौकत का दिन था, इस को मुक़र्रर करना अपने कमाले क़ुव्वत का इज़्हार है, नीज़ इस में येह भी ह़िक्मत थी कि ह़क़ का ज़ुहूर और बात़िल की रुस्वाई के लिये ऐसा ही वक़्त मुनासिब है जब कि अत़राफ़ व जवानिब के तमाम लोग मुज्तमअ़ हों। **76 :** ताकि ख़ूब रोशनी फैल जाए और देखने वाले ब इत़्मीनान देख सकें और हर चीज़ साफ़ साफ़ नज़र आए। **77 :** कसीरुत्ता'दाद जादूगरों को जम्अ़ किया **78 :** वा'दे के दिन उन सब को ले कर **79 :** किसी को उस का शरीक कर के **80 :** **अल्लाह** तआ़ला पर। **81 :** या'नी जादूगर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का येह कलाम सुन कर आपस में मुख़्तलिफ़ हो गए। बा'ज़ कहने लगे कि येह भी हमारी मिस्ल जादूगर हैं। बा'ज़ ने कहा कि येह बातें ही जादूगरों की नहीं, वोह **अल्लाह** पर झूट बांधने को मन्अ़ करते हैं।

www.dawateislami.net

النَّجۡوٰى ﴿٦٢﴾ قَالُوۡۤا اِنۡ هٰذٰنِ لَسٰحِرٰنِ يُرِيۡدٰنِ اَنۡ يُّخۡرِجٰكُمۡ مِّنۡ

मश्वरत की बोले बेशक येह दोनों[82] ज़रूर जादूगर हैं चाहते हैं कि तुम्हें तुम्हारी

اَرۡضِكُمۡ بِسِحۡرِهِمَا وَيَذۡهَبَا بِطَرِيۡقَتِكُمُ الۡمُثۡلٰى ﴿٦٣﴾ فَاَجۡمِعُوۡا كَيۡدَكُمۡ ثُمَّ

ज़मीन से अपने जादू के ज़ोर से निकाल दें और तुम्हारा अच्छा दीन ले जाएं तो अपना दाउं (फ़रेब) पक्का कर लो फिर

ائۡتُوۡا صَفًّا ۚ وَقَدۡ اَفۡلَحَ الۡيَوۡمَ مَنِ اسۡتَعۡلٰى ﴿٦٤﴾ قَالُوۡا يٰمُوۡسٰۤى اِمَّاۤ اَنۡ

परा बांध (सफ़ बना) कर आओ और आज मुराद को पहुंचा जो ग़ालिब रहा बोले[83] ऐ मूसा या तो

تُلۡقِىَ وَاِمَّاۤ اَنۡ نَّكُوۡنَ اَوَّلَ مَنۡ اَلۡقٰى ﴿٦٥﴾ قَالَ بَلۡ اَلۡقُوۡا ۚ فَاِذَا

तुम डालो[84] या हम पहले डालें[85] मूसा ने कहा बल्कि तुम्हीं डालो[86] जभी

حِبَالُهُمۡ وَعِصِيُّهُمۡ يُخَيَّلُ اِلَيۡهِ مِنۡ سِحۡرِهِمۡ اَنَّهَا تَسۡعٰى ﴿٦٦﴾ فَاَوۡجَسَ فِىۡ

उन की रस्सियां और लाठियां उन के जादू के ज़ोर से उन के ख़याल में दौड़ती मा'लूम हुईं[87] तो अपने

نَفۡسِهٖ خِيۡفَةً مُّوۡسٰى ﴿٦٧﴾ قُلۡنَا لَا تَخَفۡ اِنَّكَ اَنۡتَ الۡاَعۡلٰى ﴿٦٨﴾ وَاَلۡقِ مَا

जी में मूसा ने ख़ौफ़ पाया हम ने फ़रमाया डर नहीं बेशक तू ही ग़ालिब है और डाल तो दे जो

فِىۡ يَمِيۡنِكَ تَلۡقَفۡ مَا صَنَعُوۡا ؕ اِنَّمَا صَنَعُوۡا كَيۡدُ سٰحِرٍ ؕ وَلَا يُفۡلِحُ

तेरे दहने हाथ में है[88] वोह उन की बनावटों को निगल जाएगा वोह जो बना कर लाए हैं वोह तो जादूगर का फ़रेब है और जादूगर

السّٰحِرُ حَيۡثُ اَتٰى ﴿٦٩﴾ فَاُلۡقِىَ السَّحَرَةُ سُجَّدًا قَالُوۡۤا اٰمَنَّا بِرَبِّ هٰرُوۡنَ

का भला नहीं होता कहीं आवे[89] तो सब जादूगर सज्दे में गिरा लिये गए बोले हम उस पर ईमान लाए जो हारून और मूसा

وَمُوۡسٰى ﴿٧٠﴾ قَالَ اٰمَنۡتُمۡ لَهٗ قَبۡلَ اَنۡ اٰذَنَ لَكُمۡ ؕ اِنَّهٗ لَكَبِيۡرُكُمُ الَّذِىۡ

का रब है[90] फ़िरऔन बोला क्या तुम इस पर ईमान लाए क़ब्ल इस के कि मैं तुम्हें इजाज़त दूं बेशक वोह तुम्हारा बड़ा है जिस ने

---

82 : या'नी हज़रते मूसा व हज़रते हारून (عَلَيۡهِمَا السَّلَام) **83 :** जादूगर **84 :** पहले अपना अ़सा **85 :** अपने सामान। इब्तिदा करना जादूगरों ने अदबन हज़रते मूसा عَلَيۡهِ السَّلَام की राए मुबारक पर छोड़ा और इस की बरकत से आख़िर कार اللہ तआ़ला ने उन्हें दौलते ईमान से मुशर्रफ़ फ़रमाया। **86 :** येह हज़रते मूसा عَلَيۡهِ السَّلَام ने इस लिये फ़रमाया कि जो कुछ जादू के मक्र हैं पहले वोह सब ज़ाहिर कर चुकें इस के बा'द आप मो'जिज़ा दिखाएं और हक़ बातिल को मिटाए और मो'जिज़ा सेहूर को बातिल करे तो देखने वालों को बसीरत व इ़ब्रत ह़ासिल हो। चुनान्चे, जादूगरों ने रस्सियां लाठियां वग़ैरा जो सामान लाए थे सब डाल दिया और लोगों की नज़र बन्दी कर दी। **87 :** हज़रते मूसा عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने देखा कि ज़मीन सांपों से भर गई और मीलों के मैदान में सांप ही सांप दौड़ रहे हैं और देखने वाले इस बातिल नज़र बन्दी से मस्हूर हो गए, कहीं ऐसा न हो कि बा'ज़ मो'जिज़ा देखने से पहले ही इस के गिरवीदा हो जाएं और मो'जिज़ा न देखें। **88 :** या'नी अपना अ़सा **89 :** फिर हज़रते मूसा عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالتَّسۡلِيۡمَات ने अपना अ़सा डाला वोह जादूगरों के तमाम अज़्दहों और सांपों को निगल गया और आदमी उस के ख़ौफ़ से घबरा गए। हज़रते मूसा عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उसे अपने दस्ते मुबारक में लिया तो मिस्ले साबिक़ अ़सा हो गया, येह देख कर जादूगरों को यक़ीन

www.dawateislami.net

عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ ۚ فَلَاُقَطِّعَنَّ اَيْدِيَكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ مِّنْ خِلَافٍ وَّ

तुम सब को जादू सिखाया[91] तो मुझे क़सम है ज़रूर मैं तुम्हारे एक त़रफ़ के हाथ और दूसरी त़रफ़ के पाउं काटूंगा[92] और

لَاُوصَلِّبَنَّكُمْ فِيْ جُذُوْعِ النَّخْلِ ۫ وَلَتَعْلَمُنَّ اَيُّنَاۤ اَشَدُّ عَذَابًا وَّاَبْقٰى ﴿٧١﴾

तुम्हें खजूर के डुन्ड (सूखे तने) पर सूली चढ़ाऊंगा और ज़रूर तुम जान जाओगे कि हम में किस का अ़ज़ाब सख़्त और देर पा है[93]

قَالُوْا لَنْ نُّؤْثِرَكَ عَلٰى مَا جَآءَنَا مِنَ الْبَيِّنٰتِ وَالَّذِيْ فَطَرَنَا فَاقْضِ

बोले हम हरगिज़ तुझे तरजीह़ न देंगे उन रोशन दलीलों पर जो हमारे पास आईं[94] हमें अपने पैदा करने वाले की क़सम तो तू कर चुक

مَاۤ اَنْتَ قَاضٍ ؕ اِنَّمَا تَقْضِيْ هٰذِهِ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ﴿٧٢﴾ؕ اِنَّاۤ اٰمَنَّا بِرَبِّنَا

जो तुझे करना है[95] तू इस दुन्या ही की ज़िन्दगी में तो करेगा[96] बेशक हम अपने रब पर ईमान लाए

لِيَغْفِرَ لَنَا خَطٰيٰنَا وَمَاۤ اَكْرَهْتَنَا عَلَيْهِ مِنَ السِّحْرِ ؕ وَاللّٰهُ خَيْرٌ وَّ

कि वोह हमारी ख़त़ाएं बख़्श दे और वोह जो तू ने हमें मजबूर किया जादू पर[97] और **अल्लाह** बेहतर है[98] और

الثّلث

اَبْقٰى ﴿٧٣﴾ اِنَّهٗ مَنْ يَّاْتِ رَبَّهٗ مُجْرِمًا فَاِنَّ لَهٗ جَهَنَّمَ ؕ لَا يَمُوْتُ فِيْهَا

सब से ज़ियादा बाक़ी रहने वाला[99] बेशक जो अपने रब के ह़ुज़ूर मुजरिम[100] हो कर आए तो ज़रूर उस के लिये जहन्नम है जिस में न मरे[101]

وَلَا يَحْيٰى ﴿٧٤﴾ وَمَنْ يَّاْتِهٖ مُؤْمِنًا قَدْ عَمِلَ الصّٰلِحٰتِ فَاُولٰٓئِكَ لَهُمُ

न जिये[102] और जो उस के ह़ुज़ूर ईमान के साथ आए कि अच्छे काम किये हों[103] तो उन्हीं के

हुवा कि येह मो'जिज़ा है जिस से सेह़्र मुक़ाबला नहीं कर सकता और जादू की फ़रेब कारी इस के सामने क़ाइम नहीं रह सकती। **90 :** سُبْحٰنَ اللہ क्या अ़जीब ह़ाल था, जिन लोगों ने अभी कुफ़्र व जुह़ूद के लिये रस्सियां और अ़सा डाले थे अभी मो'जिज़ा देख कर उन्हों ने शुक्र व सुजूद के लिये सर झुका दिये और गरदनें डाल दीं, मन्क़ूल है कि इस सज्दे में उन्हें जन्नत और दोज़ख़ दिखाई गई और इन्हों ने जन्नत में अपने मनाज़िल देख लिये। **91 :** या'नी जादू में वोह उस्तादे कामिल और तुम सब से फ़ाइक़ है। (مَعَاذَ اللہ) **92 :** या'नी दह्ने हाथ और बाएं पाउं **93 :** इस से फ़िरऔ़न मल्ऊ़न की मुराद येह थी कि उस का अ़ज़ाब सख़्त तर है, या रब्बुल आ़लमीन का। फ़िरऔ़न का येह मुतकब्बिराना कलिमा सुन कर वोह जादूगर **94 :** यदे बैज़ा और अ़साए मूसा। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा है कि उन का इस्तिद्लाल येह था कि अगर तू ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام के मो'जिज़े को भी सेह़्र कहता है तो बता वोह रस्से और लाठियां कहां गईं ? बा'ज़ मुफ़स्सिरीन कहते हैं कि बय्यिनात से मुराद जन्नत और उस में अपने मनाज़िल का देखना है। **95 :** हमें इस की कुछ परवा नहीं **96 :** आगे तो तेरी कुछ मजाल नहीं और दुन्या ज़ाइल और यहां की हर चीज़ फ़ना होने वाली है, तू मेह्रबान भी हो तो बक़ाए दवाम नहीं दे सकता, फिर ज़िन्दगानिये दुन्या और इस की राह़तों के ज़वाल का क्या ग़म, बिल ख़ुसूस उस को जो जानता है कि आख़िरत में आ'माले दुन्या की जज़ा मिलेगी। **97 :** ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام के मुक़ाबले में। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि फ़िरऔ़न ने जब जादूगरों को ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام के मुक़ाबले के लिये बुलाया था तो जादूगरों ने फ़िरऔ़न से कहा था कि हम ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام को सोता हुवा देखना चाहते हैं, चुनान्चे इस की कोशिश की गई और उन्हें ऐसा मौक़अ़ बहम पहुंचा दिया गया, उन्हों ने देखा कि ह़ज़रत ख़्वाब में हैं और अ़सा शरीफ़ पहरा दे रहा है, येह देख कर जादूगरों ने फ़िरऔ़न से कहा कि मूसा जादूगर नहीं हैं क्यूं कि जादूगर जब सोता है तो उस वक़्त उस का जादू काम नहीं करता, मगर फ़िरऔ़न ने उन्हें जादू करने पर मजबूर किया, उस की मग़्फ़िरत के वोह **अल्लाह** तआ़ला से त़ालिब और उम्मीद वार हैं। **98 :** फ़रमां बरदारों को सवाब देने में **99 :** ब लिह़ाज़ अ़ज़ाब करने के ना फ़रमानों पर। **100 :** या'नी काफ़िर मिस्ल फ़िरऔ़न के **101 :** कि मर कर ही इस से छूट सके। **102 :** ऐसा जीना जिस से कुछ नफ़्अ़ उठा सके। **103 :** या'नी जिन का ईमान पर ख़ातिमा हुवा हो और उन्हों ने अपनी ज़िन्दगी में नेक अ़मल किये हों फ़राइज़ और नवाफ़िल बजा लाए हों।

www.dawateislami.net

الدَّرَجٰتُ الْعُلٰى ﴿٧٥﴾ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ

दरजे ऊंचे बसने के बाग़ जिन के नीचे नहरें बहें हमेशा उन में

فِيْهَا ؕ وَذٰلِكَ جَزٰٓؤُا مَنْ تَزَكّٰى ﴿٧٦﴾ وَلَقَدْ اَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى ۙ اَنْ اَسْرِ ع ٣ ٢٢ ١٢

रहें और येह सिला है उस का जो पाक हुवा[104] और बेशक हम ने मूसा को वह्य की[105] कि रातों रात मेरे

بِعِبَادِيْ فَاضْرِبْ لَهُمْ طَرِيْقًا فِي الْبَحْرِ يَبَسًا ۙ لَّا تَخٰفُ دَرَكًا وَّلَا

बन्दों को ले चल[106] और उन के लिये दरिया में सूखा रास्ता निकाल दे[107] तुझे डर न होगा कि फ़िरऔ़न आ ले और न

تَخْشٰى ﴿٧٧﴾ فَاَتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ بِجُنُوْدِهٖ فَغَشِيَهُمْ مِّنَ الْيَمِّ مَا غَشِيَهُمْ ﴿٧٨﴾ ط

ख़त़रा[108] तो उन के पीछे फ़िरऔ़न पड़ा अपने लश्कर ले कर[109] तो उन्हें दरिया ने ढांप लिया जैसा ढांप लिया[110]

وَاَضَلَّ فِرْعَوْنُ قَوْمَهٗ وَمَا هَدٰى ﴿٧٩﴾ يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ قَدْ اَنْجَيْنٰكُمْ

और फ़िरऔ़न ने अपनी क़ौम को गुमराह किया और राह न दिखाई[111] ऐ बनी इसराईल बेशक हम ने तुम को तुम्हारे

مِّنْ عَدُوِّكُمْ وَوٰعَدْنٰكُمْ جَانِبَ الطُّوْرِ الْاَيْمَنَ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّ

दुश्मन[112] से नजात दी और तुम्हें त़ूर की दह्नी त़रफ़ का वा'दा दिया[113] और तुम पर मन्न और

وَالسَّلْوٰى ﴿٨٠﴾ كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ وَلَا تَطْغَوْا فِيْهِ فَيَحِلَّ

सल्वा उतारा[114] खाओ जो पाक चीज़ें हम ने तुम्हें रोज़ी दीं और इस में ज़ियादती न करो[115] कि तुम पर

عَلَيْكُمْ غَضَبِيْ ۚ وَمَنْ يَّحْلِلْ عَلَيْهِ غَضَبِيْ فَقَدْ هَوٰى ﴿٨١﴾ وَاِنِّيْ لَغَفَّارٌ

मेरा ग़ज़ब उतरे और जिस पर मेरा ग़ज़ब उतरा बेशक वोह गिरा[116] और बेशक मैं बहुत बख़्शने वाला हूं

لِّمَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ثُمَّ اهْتَدٰى ﴿٨٢﴾ وَمَآ اَعْجَلَكَ عَنْ

उसे जिस ने तौबा की[117] और ईमान लाया और अच्छा काम किया फिर हिदायत पर रहा[118] और तू ने अपनी क़ौम से

104 : कुफ़्र की नजासत और मआ़सी की गन्दगी से। **105 :** जब कि फ़िरऔ़न मो'जिज़ात देख कर राह पर न आया और पन्द पज़ीर न हुवा और बनी इसराईल पर ज़ुल्मो सितम और ज़ियादा करने लगा। **106 :** मिस्र से और जब दरिया के किनारे पहुंचें और फ़िरऔ़नी लश्कर पीछे से आए तो अन्देशा न कर **107 :** अपना अ़सा मार कर **108 :** दरिया में ग़र्क़ होने का। मूसा عَلَيْهِ السَّلَام हुक्मे इलाही पा कर शब के अव्वल वक़्त सत्तर हज़ार बनी इसराईल को हमराह ले कर मिस्र से रवाना हो गए। **109 :** जिन में छ[6] लाख क़िब्ती थे। **110 :** वोह ग़र्क़ हो गए और पानी उन के सरों से ऊंचा हो गया। **111 :** इस के बा'द **अल्लाह** तआ़ला ने अपने और एह़सान का ज़िक्र किया और फ़रमाया : **112 :** या'नी फ़िरऔ़न और उस की क़ौम **113 :** कि हम मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को वहां तौरैत अ़त़ा फ़रमाएंगे जिस पर अ़मल किया जाए **114 :** तीह में और फ़रमाया : **115 :** नाशुक्री और कुफ़्राने ने'मत कर के और इन ने'मतों को मआ़सी और गुनाहों में ख़र्च कर के या एक दूसरे पर ज़ुल्म कर के **116 :** जहन्नम में और हलाक हुवा। **117 :** शिर्क से **118 :** ता दमे आख़िर।

www.dawateislami.net

قَوْمِكَ يٰمُوْسٰى ﴿٨٣﴾ قَالَ هُمْ اُولَآءِ عَلٰٓى اَثَرِىْ وَعَجِلْتُ اِلَيْكَ رَبِّ

क्यूं जल्दी की ऐ मूसा[119] अ़र्ज़ की कि वोह येह हैं मेरे पीछे और ऐ मेरे रब तेरी त़रफ़ मैं जल्दी कर के ह़ाज़िर हुवा

لِتَرْضٰى ﴿٨٤﴾ قَالَ فَاِنَّا قَدْ فَتَنَّا قَوْمَكَ مِنْۢ بَعْدِكَ وَاَضَلَّهُمُ

कि तू राज़ी हो[120] फ़रमाया तो हम ने तेरे आने के बा'द तेरी क़ौम को[121] बला में डाला और उन्हें सामिरी

السَّامِرِىُّ ﴿٨٥﴾ فَرَجَعَ مُوْسٰٓى اِلٰى قَوْمِهٖ غَضْبَانَ اَسِفًا ۚ قَالَ يٰقَوْمِ

ने गुमराह कर दिया[122] तो मूसा अपनी क़ौम की त़रफ़ पलटा[123] ग़ुस्से में भरा अफ़्सोस करता[124] कहा ऐ मेरी क़ौम

اَلَمْ يَعِدْكُمْ رَبُّكُمْ وَعْدًا حَسَنًا ۙ اَفَطَالَ عَلَيْكُمُ الْعَهْدُ اَمْ اَرَدْتُّمْ

क्या तुम से तुम्हारे रब ने अच्छा वा'दा न किया था[125] क्या तुम पर मुद्दत लम्बी गुज़री या तुम ने चाहा

اَنْ يَّحِلَّ عَلَيْكُمْ غَضَبٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ فَاَخْلَفْتُمْ مَّوْعِدِىْ ﴿٨٦﴾ قَالُوْا مَآ

कि तुम पर तुम्हारे रब का ग़ज़ब उतरे तो तुम ने मेरा वा'दा ख़िलाफ़ किया[126] बोले हम ने

اَخْلَفْنَا مَوْعِدَكَ بِمَلْكِنَا وَلٰكِنَّا حُمِّلْنَآ اَوْزَارًا مِّنْ زِيْنَةِ الْقَوْمِ

आप का वा'दा अपने इख़्तियार से ख़िलाफ़ न किया लेकिन हम से कुछ बोझ उठवाए गए इस क़ौम के गहने के[127]

فَقَذَفْنٰهَا فَكَذٰلِكَ اَلْقَى السَّامِرِىُّ ﴿٨٧﴾ فَاَخْرَجَ لَهُمْ عِجْلًا جَسَدًا

तो हम ने उन्हें[128] डाल दिया फिर इसी त़रह़ सामिरी ने डाला[129] तो उस ने उन के लिये एक बछड़ा निकाला बेजान का धड़

لَّهٗ خُوَارٌ فَقَالُوْا هٰذَآ اِلٰهُكُمْ وَاِلٰهُ مُوْسٰى ۙ فَنَسِىَ ﴿٨٨﴾ اَفَلَا يَرَوْنَ

गाय की त़रह़ बोलता[130] तो बोले[131] येह है तुम्हारा मा'बूद और मूसा का मा'बूद मूसा तो भूल गए[132] तो क्या नहीं देखते

119 : ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام जब अपनी क़ौम में से सत्तर आदमियों को मुन्तख़ब कर के तौरैत लेने तूर पर तशरीफ़ ले गए फिर कलामे परवर्दगार के शौक़ में उन से आगे बढ़ गए उन्हें पीछे छोड़ दिया और फ़रमा दिया कि मेरे पीछे पीछे चले आओ, इस पर **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने फ़रमाया : وَمَآ اَعْجَلَكَ (और तू ने अपनी क़ौम से क्यूं जल्दी की ऐ मूसा !) तो ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने **120 :** या'नी तेरी रिज़ा और ज़ियादा हो। **मस्अला :** इस आयत से इज्तिहाद का जवाज़ साबित हुवा। (مدارک) **121 :** जिन्हें आप ने ह़ज़रते हारून عَلَيْهِ السَّلَام के साथ छोड़ा है। **122 :** गौसाला परस्ती की दा'वत दे कर। **मस्अला :** इस आयत में इज़्लाल या'नी गुमराह करने की निस्बत सामिरी की त़रफ़ फ़रमाई गई क्यूं कि वोह इस का सबब व बाइ़स हुवा, इस से साबित हुवा कि किसी चीज़ को सबब की त़रफ़ निस्बत करना जाइज़ है। इसी त़रह़ कह सकते हैं कि मां बाप ने परवरिश की, दीनी पेश्वाओं ने हिदायत की, औलिया ने ह़ाजत रवाई फ़रमाई, बुज़ुर्गों ने बला दफ़्अ़ की। मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया है कि उमूर ज़ाहिर में मन्शा व सबब की त़रफ़ मन्सूब कर दिये जाते हैं अगर्चे ह़क़ीक़त में इन का मूजिद **अल्लाह** तआ़ला है और क़ुरआने करीम में ऐसी निस्बतें ब कसरत वारिद हैं। (خازن) **123 :** चालीस दिन पूरे कर के तौरैत ले कर **124 :** उन के ह़ाल पर **125 :** कि वोह तुम्हें तौरैत अ़त़ा फ़रमाएगा जिस में हिदायत है, नूर है, हज़ार सूरतें हैं, हर सूरत में हज़ार आयतें हैं। **126 :** और ऐसा नाक़िस काम किया कि गौसाला को पूजने लगे, तुम्हारा वा'दा तो मुझ से येह था कि मेरे ह़ुक्म की इत़ाअ़त करोगे और मेरे दीन पर क़ाइम रहोगे **127 :** या'नी क़ौमे फ़िरऔ़न के ज़ेवरों के जो बनी इसराईल ने उन लोगों से आ़रियत के तौ़र पर मांग लिये थे। **128 :** सामिरी के ह़ुक्म से आग में **129 :** उन ज़ेवरों को जो उस के पास थे और उस ख़ाक को जो ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام के घोड़े के क़दम के नीचे से उस ने ह़ासिल की थी। **130 :** येह बछड़ा सामिरी ने बनाया और उस में कुछ सूराख़ इस त़रह़ रखे कि जब उन में हवा दाख़िल हो तो उस से बछड़े की

www.dawateislami.net

اَلَّا یَرْجِعُ اِلَیْهِمْ قَوْلًا ۙ۵ وَّ لَا یَمْلِكُ لَهُمْ ضَرًّا وَّ لَا نَفْعًا ﴿۸۹﴾ ع وَ لَقَدْ ع ۴ ۱۳ ۱۳

कि वोह[133] उन्हें किसी बात का जवाब नहीं देता और उन के किसी बुरे भले का इख़्तियार नहीं रखता[134] और बेशक

قَالَ لَهُمْ هٰرُوْنُ مِنْ قَبْلُ یٰقَوْمِ اِنَّمَا فُتِنْتُمْ بِهٖ ۚ وَ اِنَّ رَبَّكُمُ الرَّحْمٰنُ

उन से हारून ने इस से पहले कहा था कि ऐ मेरी क़ौम यूंही है कि तुम इस के सबब फ़ितने में पड़े[135] और बेशक तुम्हारा रब रहमान है

فَاتَّبِعُوْنِیْ وَ اَطِیْعُوْۤا اَمْرِیْ ﴿۹۰﴾ قَالُوْا لَنْ نَّبْرَحَ عَلَیْهِ عٰكِفِیْنَ حَتّٰى

तो मेरी पैरवी करो और मेरा हुक्म मानो बोले हम तो इस पर आसन मारे जमे (पूजा के लिये जम कर बैठे) रहेंगे[136] जब तक

یَرْجِعَ اِلَیْنَا مُوْسٰى ﴿۹۱﴾ قَالَ یٰهٰرُوْنُ مَا مَنَعَكَ اِذْ رَاَیْتَهُمْ ضَلُّوْۤا ۙ ﴿۹۲﴾

हमारे पास मूसा लौट के आएं[137] मूसा ने कहा ऐ हारून तुम्हें किस बात ने रोका था जब तुम ने इन्हें गुमराह होते देखा था

اَلَّا تَتَّبِعَنِ ؕ اَفَعَصَیْتَ اَمْرِیْ ﴿۹۳﴾ قَالَ یَبْنَؤُمَّ لَا تَاْخُذْ بِلِحْیَتِیْ وَ

कि मेरे पीछे आते[138] तो क्या तुम ने मेरा हुक्म न माना कहा ऐ मेरे मां जाए न मेरी दाढ़ी पकड़ो और

لَا بِرَاْسِیْ ۚ اِنِّیْ خَشِیْتُ اَنْ تَقُوْلَ فَرَّقْتَ بَیْنَ بَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ وَ لَمْ

न मेरे सर के बाल मुझे येह डर हुवा कि तुम कहोगे तुम ने बनी इसराईल में तफ़्रिक़ा डाल दिया और तुम ने

تَرْقُبْ قَوْلِیْ ﴿۹۴﴾ قَالَ فَمَا خَطْبُكَ یٰسَامِرِیُّ ﴿۹۵﴾ قَالَ بَصُرْتُ بِمَا لَمْ

मेरी बात का इन्तिज़ार न किया[139] मूसा ने कहा अब तेरा क्या हाल है ऐ सामिरी[140] बोला मैं ने वोह देखा जो

یَبْصُرُوْا بِهٖ فَقَبَضْتُ قَبْضَةً مِّنْ اَثَرِ الرَّسُوْلِ فَنَبَذْتُهَا وَ كَذٰلِكَ

लोगों ने न देखा[141] तो एक मुठ्ठी भर ली फ़िरिश्ते के निशान से फिर उसे डाल दिया[142] और

आवाज़ की त़रह़ आवाज़ पैदा हो। एक क़ौल येह भी है कि वोह अस्पे जिब्रील की ख़ाके ज़ेरे क़दम डालने से ज़िन्दा हो कर बछड़े की त़रह़ बोलता था। **131 :** सामिरी और उस के मुत्तबिईन **132 :** या'नी मूसा मा'बूद को भूल गए और इस को यहां छोड़ कर इस की जुस्तजू में तूर पर चले गए। (مَعَاذَاللہ) बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि نَسِیَ का फ़ाइल सामिरी है और मा'ना येह हैं कि सामिरी ने जो बछड़े को मा'बूद बनाया वोह अपने रब को भूल गया या वोह हुदूसे अज्साम से इस्तिद्लाल करना भूल गया। **133 :** बछड़ा **134 :** ख़िताब से भी आ़जिज़ और नफ़्अ़ व ज़रर से भी, वोह किस त़रह़ मा'बूद हो सकता है। **135 :** तो इसे न पूजो **136 :** गौसाला परस्ती पर क़ाइम रहेंगे और तुम्हारी बात न मानेंगे **137 :** इस पर ह़ज़रते हारून عَلَیْهِ السَّلَام उन से अ़लाह़दा हो गए और उन के साथ बारह हज़ार वोह लोग जिन्हों ने बछड़े की परस्तिश न की थी, जब ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام वापस तशरीफ़ लाए तो आप ने उन के शोर मचाने और बाजे बजाने की आवाज़ें सुनीं जो बछड़े के गिर्द नाचते थे, तब आप ने अपने सत्तर हमराहियों से फ़रमाया येह फ़ितने की आवाज़ है, जब क़रीब पहुंचे और ह़ज़रते हारून को देखा तो ग़ैरते दीनी से जो आप की सिरिश्त (फ़ित़रत) थी जोश में आ कर उन के सर के बाल दाहने हाथ में और दाढ़ी बाएं में पकड़ी और **138 :** और मुझे ख़बर दे देते या'नी जब इन्हों ने तुम्हारी बात न मानी थी तो तुम मुझ से क्यूं नहीं आ मिले कि तुम्हारा इन से जुदा होना भी इन के ह़क़ में एक ज़ज्र होता। **139 :** येह सुन कर ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام सामिरी की त़रफ़ मुतवज्जेह हुए चुनान्चे **140 :** तू ने ऐसा क्यूं किया इस की वज्ह बता **141 :** या'नी मैं ने ह़ज़रते जिब्रील عَلَیْهِ السَّلَام को देखा और उन को पहचान लिया, वोह अस्पे ह़यात (जन्नती घोड़े बुराक़) पर सुवार थे, मेरे दिल में येह बात आई कि मैं इन के घोड़े के निशाने क़दम की ख़ाक ले लूं **142 :** उस बछड़े में जिस को बनाया था।

سَوَّلَتۡ لِیۡ نَفۡسِیۡ ﴿۹۶﴾ قَالَ فَاذۡهَبۡ فَاِنَّ لَكَ فِی الۡحَیٰوةِ اَنۡ تَقُوۡلَ لَا

मेरे जी को येही भला लगा[143] कहा तू चलता बन[144] कि दुन्या की ज़िन्दगी में तेरी सज़ा येह है कि[145] तू कहे

مِسَاسَ ۖ وَاِنَّ لَكَ مَوۡعِدًا لَّنۡ تُخۡلَفَهٗ ۚ وَانۡظُرۡ اِلٰۤی اِلٰهِكَ الَّذِیۡ ظَلۡتَ

छू न जा[146] और बेशक तेरे लिये एक वा'दे का वक़्त है[147] जो तुझ से ख़िलाफ़ न होगा और अपने इस मा'बूद को देख जिस के सामने तू दिन भर आसन

عَلَیۡهِ عَاكِفًا ؕ لَّنُحَرِّقَنَّهٗ ثُمَّ لَنَنۡسِفَنَّهٗ فِی الۡیَمِّ نَسۡفًا ﴿۹۷﴾ اِنَّمَاۤ اِلٰهُكُمُ

मारे (पूजा के लिये बैठा) रहा[148] क़सम है हम ज़रूर इसे जलाएंगे फिर रेज़ा रेज़ा कर के दरिया में बहाएंगे[149] तुम्हारा मा'बूद तो वोही

اللّٰهُ الَّذِیۡ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ وَسِعَ كُلَّ شَیۡءٍ عِلۡمًا ﴿۹۸﴾ كَذٰلِكَ نَقُصُّ

अल्लाह है जिस के सिवा किसी की बन्दगी नहीं हर चीज़ को उस का इल्म मुहीत है हम ऐसा ही

عَلَیۡكَ مِنۡ اَنۡۢبَآءِ مَا قَدۡ سَبَقَ ۚ وَقَدۡ اٰتَیۡنٰكَ مِنۡ لَّدُنَّا ذِكۡرًا ﴿۹۹﴾ مَّنۡ

तुम्हारे सामने अगली ख़बरें बयान फ़रमाते हैं और हम ने तुम को अपने पास से एक ज़िक्र अ़ता फ़रमाया[150] जो

اَعۡرَضَ عَنۡهُ فَاِنَّهٗ یَحۡمِلُ یَوۡمَ الۡقِیٰمَةِ وِزۡرًا ﴿۱۰۰﴾ۙ خٰلِدِیۡنَ فِیۡهِ ؕ وَسَآءَ

उस से मुंह फेरे[151] तो बेशक वोह क़ियामत के दिन एक बोझ उठाएगा[152] वोह हमेशा उस में रहेंगे[153] और वोह क़ियामत

لَهُمۡ یَوۡمَ الۡقِیٰمَةِ حِمۡلًا ﴿۱۰۱﴾ۙ یَّوۡمَ یُنۡفَخُ فِی الصُّوۡرِ وَنَحۡشُرُ الۡمُجۡرِمِیۡنَ

के दिन उन के हक़ में क्या ही बुरा बोझ होगा जिस दिन सूर फूंका जाएगा[154] और हम उस दिन मुजरिमों को[155] उठाएंगे

یَوۡمَئِذٍ زُرۡقًا ﴿۱۰۲﴾ۙ یَّتَخَافَتُوۡنَ بَیۡنَهُمۡ اِنۡ لَّبِثۡتُمۡ اِلَّا عَشۡرًا ﴿۱۰۳﴾ نَحۡنُ

नीली आंखें[156] आपस में चुपके चुपके कहते होंगे कि तुम दुन्या में न रहे मगर दस रात[157] हम

143 : और येह फ़े'ल मैं ने अपने ही हवाए नफ़्स से किया, कोई दूसरा इस का बाइस व मुहर्रिक न था। इस पर हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने 144 : दूर हो जा 145 : जब तुझ से कोई मिलना चाहे तो तेरे हाल से वाक़िफ़ न हो तो उस से 146 : या'नी सब से अ़लाहदा रहना न तुझ से कोई छूए न तू किसी से छूए। लोगों से मिलना उस के लिये कुल्ली तौ़र पर मम्नूअ़ क़रार दिया गया और मुलाक़ात मुकालमत ख़रीदो फ़रोख़्त हर एक के साथ ह़राम कर दी गई और अगर इत्तिफ़ाक़न कोई उस से छू जाता तो वोह और छूने वाला दोनों शदीद बुख़ार में मुब्तला होते, वोह जंगल में येही शोर मचाता फिरता था कि कोई छू न जाना और वह़शियों और दरिन्दों में ज़िन्दगी के दिन निहायत तल्ख़ी व वह़शत में गुज़ारता था। 147 : या'नी अ़ज़ाब के वा'दे का आख़िरत में बा'द इस अ़ज़ाबे दुन्या के, तेरे शिर्को फ़साद अंगेज़ी पर 148 : और इस की इबादत पर क़ाइम रहा 149 : चुनान्चे, ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने ऐसा किया और जब आप सामिरी के इस फ़साद को मिटा चुके तो बनी इसराईल से मुख़ातबा फ़रमा कर दीने ह़क़ का बयान फ़रमाया और इर्शाद किया 150 : या'नी क़ुरआने पाक कि वोह ज़िक्रे अ़ज़ीम है और जो इस की त़रफ़ मुतवज्जेह हो उस के लिये इस किताबे करीम में नजात और बरकतें हैं और इस किताबे मुक़द्दस में उममे माज़िया (गुज़श्ता उम्मतों) के ऐसे ह़ालात का ज़िक्र व बयान है जो फ़िक्र करने और इ़ब्रत ह़ासिल करने के लाइक़ हैं। 151 : या'नी क़ुरआन से और उस पर ईमान न लाए और उस की हिदायतों से फ़ाएदा न उठाए 152 : गुनाहों का बारे गिरां 153 : या'नी इस गुनाह के अ़ज़ाब में 154 : लोगों को महशर में ह़ाज़िर करने के लिये, मुराद इस से नफ़्ख़ए सानिया (दूसरी मरतबा सूर का फूंका जाना) है। 155 : या'नी काफ़िरों को इस ह़ाल में 156 : और काले मुंह 157 : आख़िरत के अहवाल और वहां के ख़ौफ़नाक मनाज़िल देख कर उन्हें ज़िन्दगानिये दुन्या की मुद्दत बहुत क़लील मा'लूम होगी।

www.dawateislami.net

اَعْلَمُ بِمَا يَقُوْلُوْنَ اِذْ يَقُوْلُ اَمْثَلُهُمْ طَرِيْقَةً اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا يَوْمًا ﴿١٠٤﴾ ع

खूब जानते हैं जो वोह[158] कहेंगे जब कि उन में सब से बेहतर राय वाला कहेगा कि तुम सिर्फ़ एक ही दिन रहे थे[159]

وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْجِبَالِ فَقُلْ يَنْسِفُهَا رَبِّيْ نَسْفًا ﴿١٠٥﴾ فَيَذَرُهَا قَاعًا

और तुम से पहाड़ों को पूछते हैं[160] तुम फ़रमाओ उन्हें मेरा रब रेज़ा रेज़ा कर के उड़ा देगा तो ज़मीन को पट पर

صَفْصَفًا ﴿١٠٦﴾ لَّا تَرٰى فِيْهَا عِوَجًا وَّ لَاۤ اَمْتًا ﴿١٠٧﴾ يَوْمَئِذٍ يَّتَّبِعُوْنَ

हमवार कर छोड़ेगा कि तू उस में नीचा ऊंचा कुछ न देखे उस दिन पुकारने वाले

الدَّاعِيَ لَا عِوَجَ لَهٗ ۚ وَخَشَعَتِ الْاَصْوَاتُ لِلرَّحْمٰنِ فَلَا تَسْمَعُ اِلَّا

के पीछे दौड़ेंगे[161] उस में कजी न होगी[162] और सब आवाज़ें रहमान के हुज़ूर[163] पस्त हो कर रह जाएंगी तो तू न सुनेगा मगर बहुत

هَمْسًا ﴿١٠٨﴾ يَوْمَئِذٍ لَّا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ اِلَّا مَنْ اَذِنَ لَهُ الرَّحْمٰنُ وَرَضِيَ

आहिस्ता आवाज़[164] उस दिन किसी की शफ़ाअ़त काम न देगी मगर उस की जिसे रहमान ने[165] इज़्न दे दिया है और उस की

لَهٗ قَوْلًا ﴿١٠٩﴾ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيْطُوْنَ بِهٖ

बात पसन्द फ़रमाई वोह जानता है जो कुछ उन के आगे है और जो कुछ उन के पीछे[166] और उन का इल्म उसे नहीं

عِلْمًا ﴿١١٠﴾ وَعَنَتِ الْوُجُوْهُ لِلْحَيِّ الْقَيُّوْمِ ۭ وَقَدْ خَابَ مَنْ حَمَلَ ظُلْمًا ﴿١١١﴾

घेर सकता[167] और सब मुंह झुक जाएंगे उस ज़िन्दा क़ाइम रखने वाले के हुज़ूर[168] और बेशक ना मुराद रहा जिस ने ज़ुल्म का बोझ लिया[169]

---

158 : आपस में एक दूसरे से **159 :** बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि वोह उस दिन के शदाइद देख कर अपने दुन्या में रहने की मिक़्दार भूल जाएंगे। **160 शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि क़बीलए सक़ीफ़ के एक आदमी ने रसूले करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم से दरयाफ़्त किया कि क़ियामत के दिन पहाड़ों का क्या ह़ाल होगा ? इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। **161 :** जो उन्हें रोज़े क़ियामत मौक़िफ़ (मैदाने मह़शर) की त़रफ़ बुलाएगा और निदा करेगा कि चलो रह़मान के हुज़ूर पेश होने को और येह पुकारने वाले ह़ज़रते इसराफ़ील होंगे। **162 :** और इस दा'वत से कोई इन्ह़िराफ़ न कर सकेगा। **163 :** हैबत व जलाल से **164 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया ऐसी कि उस में सिर्फ़ लबों की जुम्बिश होगी। **165 :** शफ़ाअ़त करने का **166 :** या'नी तमाम माज़ियात व मुस्तक़्बिलात और जुम्ला उमूरे दुन्या व आख़िरत या'नी **अल्लाह** तआ़ला का इल्म बन्दों की ज़ातो सिफ़ात और जुम्ला ह़ालात को मुह़ीत़ है। **167 :** या'नी तमाम काएनात का इल्म ज़ाते इलाही का इह़ात़ा नहीं कर सकता, उस की ज़ात का इदराक उ़लूमे काएनात की रसाई से बरतर है, वोह अपने अस्मा व सिफ़ात और आसारे क़ुदरत व शुयूने ह़िक्मत से पहचाना जाता है :

کجا دریابد اورا عقل چالاک　　که او بالا تر است از حد ادراک

نظر کن اندر اسماء و صفاتش　　که واقف نیست کس از کنہ ذاتش

(या'नी तेज़ अ़क़्ल भी उस की ज़ात का इदराक कैसे कर सकती है ? जब कि वोह तो फ़हमो इदराक से बरतर है, लिहाज़ा उस की सिफ़ात व अस्मा में ग़ौरो फ़िक्र करो कि उस की ज़ात व ह़क़ीक़त से कोई आश्ना नहीं) बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने इस आयत के मा'ना येह बयान किये हैं कि उ़लूमे ख़ल्क़ मा'लूमाते इलाहिय्यह का इह़ात़ा नहीं कर सकते, ब ज़ाहिर येह इबारतें दो हैं मगर मआल पर नज़र रखने वाले ब आसानी समझ लेते हैं कि फ़र्क़ सिर्फ़ ता'बीर का है। **168 :** और हर एक शाने इ़ज्ज़ो नियाज़ के साथ ह़ाज़िर होगा, किसी में सरकशी न रहेगी, **अल्लाह** तआ़ला के क़हरो हुकूमत का ज़ुहूरे ताम होगा। **169 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने इस की तफ़्सीर में फ़रमाया : जिस ने शिर्क किया टोटे (नुक़्सान) में रहा और बेशक शिर्क शदीद तरीन ज़ुल्म है और जो इस ज़ुल्म का ज़ेरे बार हो कर (बोझ उठा कर) मौक़िफ़े क़ियामत में आए उस से बढ़ कर ना मुराद कौन ?

www.dawateislami.net

وَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا يَخٰفُ ظُلْمًا وَّلَا هَضْمًا ﴿۱۱۲﴾

और जो कुछ नेक काम करे और हो मुसल्मान तो उसे न ज़ियादती का ख़ौफ़ होगा न नुक़्सान का[170]

وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا وَّصَرَّفْنَا فِيْهِ مِنَ الْوَعِيْدِ لَعَلَّهُمْ

और यूंही हम ने इसे अ़रबी क़ुरआन उतारा और इस में त़रह़ त़रह़ से अ़ज़ाब के वा'दे दिये[171] कि कहीं

يَتَّقُوْنَ اَوْ يُحْدِثُ لَهُمْ ذِكْرًا ﴿۱۱۳﴾ فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۚ وَلَا

उन्हें डर हो या उन के दिल में कुछ सोच पैदा करे[172] तो सब से बुलन्द है अल्लाह सच्चा बादशाह[173] और

تَعْجَلْ بِالْقُرْاٰنِ مِنْ قَبْلِ اَنْ يُّقْضٰۤى اِلَيْكَ وَحْيُهٗ ۫ وَقُلْ رَّبِّ زِدْنِيْ

क़ुरआन में जल्दी न करो जब तक उस की वह्‌य तुम्हें पूरी न हो ले[174] और अ़र्ज़ करो कि ऐ मेरे रब मुझे

ع ٦ ١١ ١٥ عِلْمًا ﴿۱۱۴﴾ وَلَقَدْ عَهِدْنَاۤ اِلٰۤى اٰدَمَ مِنْ قَبْلُ فَنَسِيَ وَلَمْ نَجِدْ لَهٗ عَزْمًا ﴿۱۱۵﴾ ع

इल्म ज़ियादा दे और बेशक हम ने आदम को इस से पहले एक ताकीदी हुक्म दिया था[175] तो वोह भूल गया और हम ने उस का क़स्द न पाया

وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْۤا اِلَّاۤ اِبْلِيْسَ ؕ اَبٰى ﴿۱۱۶﴾

और जब हम ने फ़िरिश्तों से फ़रमाया कि आदम को सज्दा करो तो सब सज्दे में गिरे मगर इब्लीस उस ने न माना

فَقُلْنَا يٰۤاٰدَمُ اِنَّ هٰذَا عَدُوٌّ لَّكَ وَلِزَوْجِكَ فَلَا يُخْرِجَنَّكُمَا مِنَ الْجَنَّةِ

तो हम ने फ़रमाया ऐ आदम बेशक येह तेरा और तेरी बीबी का दुश्मन है[176] तो ऐसा न हो कि वोह तुम दोनों को जन्नत से निकाल दे

فَتَشْقٰى ﴿۱۱۷﴾ اِنَّ لَكَ اَلَّا تَجُوْعَ فِيْهَا وَلَا تَعْرٰى ﴿۱۱۸﴾ ۙ وَاَنَّكَ لَا تَظْمَؤُا فِيْهَا

फिर तू मशक़्क़त में पड़े[177] बेशक तेरे लिये जन्नत में येह है कि न तू भूका हो न नंगा हो और येह कि तुझे न उस में प्यास लगे

وَلَا تَضْحٰى ﴿۱۱۹﴾ فَوَسْوَسَ اِلَيْهِ الشَّيْطٰنُ قَالَ يٰۤاٰدَمُ هَلْ اَدُلُّكَ عَلٰى

न धूप[178] तो शैत़ान ने उसे वस्वसा दिया बोला ऐ आदम क्या मैं तुम्हें बता दूं

170 मस्अला : इस आयत से मा'लूम हुवा कि त़ाअ़त और नेक आ'माल सब की क़बूलिय्यत ईमान के साथ मशरूत़ है कि ईमान हो तो सब नेकियां कारआमद हैं और ईमान न हो तो सब अ़मल बेकार। **171 :** फ़राइज़ के छोड़ने और मम्नूआ़त का इरतिकाब करने पर। **172 :** जिस से उन्हें नेकियों की रग़बत और बदियों से नफ़रत हो और वोह पन्दो नसीह़त ह़ासिल करें। **173 :** जो अस्ल मालिक है और तमाम बादशाह उस के मोह़ताज। **174 शाने नुज़ूल :** जब ह़ज़रते जिब्रील क़ुरआने करीम ले कर नाज़िल होते थे तो हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم उन के साथ साथ पढ़ते थे और जल्दी करते थे ताकि ख़ूब याद हो जाए, इस पर येह आयत नाज़िल हुई, फ़रमाया गया कि आप मशक़्क़त न उठाएं और सूरए क़ियामह में अल्लाह तआ़ला ने ख़ुद ज़िम्मा ले कर आप की और ज़ियादा तसल्ली फ़रमा दी। **175 :** कि शजरे मम्नूआ़ के पास न जाएं। **176 :** इस से मा'लूम हुवा कि साह़िबे फ़ज़्लो शरफ़ की फ़ज़ीलत को तस्लीम न करना और उस की ता'ज़ीमो एह़तिराम बजा लाने से ए'राज़ करना दलीले ह़सदो अ़दावत है। इस आयत में शैत़ान का ह़ज़रते आदम को सज्दा न करना आप के साथ उस की दुश्मनी की दलील क़रार दिया गया। **177 :** और अपनी ग़िज़ा और ख़ूराक के लिये ज़मीन जोतने, खेती करने, दाना निकालने, पीसने, पकाने की मेहनत में मुब्तला हो और चूंकि औ़रत का नफ़क़ा मर्द के ज़िम्मे है इस लिये इस तमाम मेहनत की निस्बत सिर्फ़ ह़ज़रते आदम

شَجَرَةِ الۡخُلۡدِ وَمُلۡكٍ لَّا يَبۡلٰى ﴿۱۲۰﴾ فَاَكَلَا مِنۡهَا فَبَدَتۡ لَهُمَا سَوۡاٰتُهُمَا وَ

हमेशा जीने का पेड़[179] और वोह बादशाही कि पुरानी न पड़े[180] तो उन दोनों ने उस में से खा लिया अब उन पर उन की शर्म की चीज़ें ज़ाहिर हुईं[181] और

طَفِقَا يَخۡصِفٰنِ عَلَيۡهِمَا مِنۡ وَّرَقِ الۡجَنَّةِ ۫ وَعَصٰۤى اٰدَمُ رَبَّهٗ فَغَوٰى ﴿۱۲۱﴾ صلے

जन्नत के पत्ते अपने ऊपर चिपकाने लगे[182] और आदम से अपने रब के हुक्म में लग़्ज़िश वाक़ेअ हुई तो जो मत़लब चाहा था उस की राह न पाई[183]

ثُمَّ اجۡتَبٰهُ رَبُّهٗ فَتَابَ عَلَيۡهِ وَهَدٰى ﴿۱۲۲﴾ قَالَ اهۡبِطَا مِنۡهَا جَمِيۡعًا

फिर उसे उस के रब ने चुन लिया तो उस पर अपनी रह़मत से रुजूअ़ फ़रमाई और अपने कुर्बे ख़ास की राह दिखाई फ़रमाया कि तुम दोनों मिल कर जन्नत से उतरो

بَعۡضُكُمۡ لِبَعۡضٍ عَدُوٌّ ۚ فَاِمَّا يَاۡتِيَنَّكُمۡ مِّنِّىۡ هُدًى ۙ فَمَنِ اتَّبَعَ هُدَاىَ

तुम में एक दूसरे का दुश्मन है फिर अगर तुम सब को मेरी त़रफ़ से हिदायत आए[184] तो जो मेरी हिदायत का पैरव हुवा

فَلَا يَضِلُّ وَلَا يَشۡقٰى ﴿۱۲۳﴾ وَمَنۡ اَعۡرَضَ عَنۡ ذِكۡرِىۡ فَاِنَّ لَهٗ مَعِيۡشَةً

वोह न बहके[185] न बद बख़्त हो[186] और जिस ने मेरी याद से मुंह फेरा[187] तो बेशक उस के लिये तंग

ضَنۡكًا وَّنَحۡشُرُهٗ يَوۡمَ الۡقِيٰمَةِ اَعۡمٰى ﴿۱۲۴﴾ قَالَ رَبِّ لِمَ حَشَرۡتَنِىۡۤ اَعۡمٰى

ज़िन्दगानी है[188] और हम उसे क़ियामत के दिन अन्धा उठाएंगे कहेगा ऐ रब मेरे मुझे तू ने क्यूं अन्धा उठाया

وَقَدۡ كُنۡتُ بَصِيۡرًا ﴿۱۲۵﴾ قَالَ كَذٰلِكَ اَتَتۡكَ اٰيٰتُنَا فَنَسِيۡتَهَا ۚ وَكَذٰلِكَ

मैं तो अंख्यारा (देखने वाला) था[189] फ़रमाएगा यूंही तेरे पास हमारी आयतें आई थीं[190] तू ने उन्हें भुला दिया और ऐसे ही

عَلَيْهِ السَّلَام की त़रफ़ फ़रमाई गई। **178 :** हर त़रह़ का ऐश व राह़त जन्नत में मौजूद है कस्ब व मेह़नत से बिल्कुल अम्न है। **179 :** जिस को खा कर खाने वाले को दाइमी ज़िन्दगी ह़ासिल हो जाती है **180 :** और उस में ज़वाल न आए। **181 :** या'नी बिहिश्ती लिबास उन के जिस्म से उतर गए। **182 :** सत्र छुपाने और जिस्म ढकने के लिये। **183 :** और उस दरख़्त के खाने से दाइमी ह़यात न मिली, फिर ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام तौबा व इस्तिग़फ़ार में मश्ग़ूल हुए और बारगाहे इलाही में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के वसीले से दुआ़ की। **184 :** या'नी किताब और रसूल। **185 :** या'नी दुन्या में। **186 :** आख़िरत में क्यूं कि आख़िरत की बद बख़्ती दुन्या में त़रीक़े ह़क़ से बहक्ने का नतीजा है तो जो कोई किताबे इलाही और रसूले बरह़क़ का इत्तिबाअ़ करे और उन के हुक्म के मुत़ाबिक़ चले वोह दुन्या में बहक्ने से और आख़िरत में उस के अ़ज़ाब व वबाल से नजात पाएगा। **187 :** और मेरी हिदायत से रू गर्दानी की **188 :** दुन्या में या क़ब्र में या आख़िरत में या दीन में या इन सब में। दुन्या की तंग ज़िन्दगानी येह है कि हिदायत का इत्तिबाअ़ न करने से अ़मले बद और ह़राम में मुब्तला हो या क़नाअ़त से मह़रूम हो कर गिरिफ़्तारे ह़िर्स हो जाए और कस्रते मालो अस्बाब से भी उस को फ़राग़े ख़ात़िर (बे फ़िक्री) और सुकूने क़ल्ब मुयस्सर न हो, दिल हर चीज़ की त़लब में आवारा हो और ह़िर्स के ग़मों से कि येह नहीं वोह नहीं, ह़ाल तारीक और वक़्त ख़राब रहे और मोमिने मुतवक्किल की त़रह़ उस को सुकून व फ़राग़ ह़ासिल ही न हो जिस को ह़याते त़य्यिबा कहते हैं قَالَ تَعَالٰى : فَلَنُحۡيِيَنَّهٗ حَيٰوةً طَيِّبَةً (तो ज़रूर हम उसे अच्छी ज़िन्दगी जिलाएंगे)। और क़ब्र की तंग ज़िन्दगानी येह है कि ह़दीस शरीफ़ में वारिद हुवा कि काफ़िर पर निनानवे अज़्दहे उस की क़ब्र में मुसल्लत़ किये जाते हैं। **शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया : येह आयत अस्वद बिन अ़ब्दुल उ़ज़्ज़ा मख़्ज़ूमी के ह़क़ में नाज़िल हुई। और क़ब्र की ज़िन्दगानी से मुराद क़ब्र का इस सख़्ती से दबाना है जिस से एक त़रफ़ की पस्लियां दूसरी त़रफ़ आ जाती हैं। और आख़िरत में तंग ज़िन्दगानी जहन्नम के अ़ज़ाब हैं जहां ज़क़्क़ूम (थूहड़) और खौलता पानी और जहन्नमियों के ख़ून और उन के पीप खाने पीने को दी जाएगी। और दीन में तंग ज़िन्दगानी येह है कि नेकी की राहें तंग हो जाएं और आदमी कस्बे ह़राम में मुब्तला हो। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि बन्दे को थोड़ा मिले या बहुत अगर ख़ौफ़े ख़ुदा नहीं तो उस में कुछ भलाई नहीं और येह तंग ज़िन्दगानी है। (تفسیر کبیر و خازن و مدارک وغیرہ) **189 :** दुन्या में। **190 :** तू उन पर ईमान न लाया और

www.dawateislami.net

الْيَوْمَ تُنْسٰى ﴿۱۲۶﴾ وَكَذٰلِكَ نَجْزِيْ مَنْ اَسْرَفَ وَلَمْ يُؤْمِنْ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ ط

आज तेरी कोई ख़बर न लेगा[191] और हम ऐसा ही बदला देते हैं जो ह़द से बढ़े और अपने रब की आयतों पर ईमान न लाए

وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَشَدُّ وَاَبْقٰى ﴿۱۲۷﴾ اَفَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ

और बेशक आख़िरत का अ़ज़ाब सब से सख़्त तर और सब से देर पा है तो क्या उन्हें इस से राह न मिली कि हम ने उन से पहले कितनी

مِّنَ الْقُرُوْنِ يَمْشُوْنَ فِيْ مَسٰكِنِهِمْ ط اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّاُولِي النُّهٰى ﴿۱۲۸﴾ ع

संगतें (क़ौमें) हलाक कर दीं[192] कि येह उन के बसने की जगह चलते फिरते हैं[193] बेशक इस में निशानियां हैं अ़क़्ल वालों को[194]

وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَكَانَ لِزَامًا وَّاَجَلٌ مُّسَمًّى ﴿۱۲۹﴾ ط فَاصْبِرْ

और अगर तुम्हारे रब की एक बात न गुज़र चुकी होती[195] तो ज़रूर अ़ज़ाब उन्हें[196] लिपट जाता और अगर न होता एक वा'दा ठहराया हुवा[197] तो उन की

عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ

बातों पर सब्र करो और अपने रब को सराहते (ता'रीफ़ करते) हुए उस की पाकी बोलो सूरज चमकने से पहले[198] और उस के

غُرُوْبِهَا ج وَمِنْ اٰنَآئِ الَّيْلِ فَسَبِّحْ وَاَطْرَافَ النَّهَارِ لَعَلَّكَ تَرْضٰى ﴿۱۳۰﴾

डूबने से पहले[199] और रात की घड़ियों में उस की पाकी बोलो[200] और दिन के किनारों पर[201] इस उम्मीद पर कि तुम राज़ी हो[202]

وَلَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ اِلٰى مَا مَتَّعْنَا بِهٖۤ اَزْوَاجًا مِّنْهُمْ زَهْرَةَ الْحَيٰوةِ

और ऐ सुनने वाले अपनी आंखें न फैला उस की त़रफ़ जो हम ने काफ़िरों के जोड़ों को बरत्ने के लिये दी है जीती दुन्या की

الدُّنْيَا ۵ لِنَفْتِنَهُمْ فِيْهِ ط وَرِزْقُ رَبِّكَ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ﴿۱۳۱﴾ وَاْمُرْ اَهْلَكَ

ताज़गी[203] कि हम उन्हें उस के सबब फ़ित्ने में डालें[204] और तेरे रब का रिज़्क़[205] सब से अच्छा और सब से देर पा है और अपने घर वालों

191 : जहन्नम की आग में जला करेगा। **192 :** जो रसूलों को नहीं मानती थीं। **193 :** या'नी क़ुरैश अपने सफ़रों में उन के दियार (मकानात व बस्तियों) पर गुज़रते हैं और उन की हलाकत के निशान देखते हैं। **194 :** जो इब्रत ह़ासिल करें और समझें कि अम्बिया की तक्ज़ीब और उन की मुख़ालफ़त का अन्जाम बुरा है। **195 :** या'नी येह कि उम्मते मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के अ़ज़ाब में ताख़ीर की जाएगी। **196 :** दुन्या ही में **197 :** या'नी रोज़े क़ियामत। **198 :** इस से नमाज़े फ़ज्र मुराद है। **199 :** इस से ज़ोहर व अ़स्र की नमाज़ें मुराद हैं जो दिन के निस्फ़े आख़िर में आफ़्ताब के ज़वाल व ग़ुरूब के दरमियान वाक़ेअ़ हैं। **200 :** या'नी मग़रिब व इ़शा की नमाज़ें पढ़ो। **201 :** फ़ज्र व मग़रिब की नमाज़ें, इन की ताकीदन तक्रार फ़रमाई गई। और बा'ज़ मुफ़स्सिरीन क़ब्ले ग़ुरूब से नमाज़े अ़स्र और अत़राफ़े नहार से ज़ोहर मुराद लेते हैं, उन की तौजीह येह है कि नमाज़े ज़ोहर ज़वाल के बा'द है और इस वक़्त दिन के निस्फ़े अव्वल और निस्फ़े आख़िर के अत़राफ़ मिलते हैं। निस्फ़े अव्वल की इन्तिहा है और निस्फ़े आख़िर की इब्तिदा। (مدارک وخازن) **202 :** **अल्लाह** के फ़ज़्लो अ़त़ा और उस के इन्आ़मो इक्राम से कि तुम्हें उम्मत के ह़क़ में शफ़ीअ़ बना कर तुम्हारी शफ़ाअ़त क़बूल फ़रमाए और तुम्हें राज़ी करे जैसा कि उस ने फ़रमाया है : وَلَسَوْفَ يُعْطِيْكَ رَبُّكَ فَتَرْضٰى (और बेशक क़रीब है कि तुम्हारा रब तुम्हें इतना देगा कि तुम राज़ी हो जाओगे)। **203 :** या'नी अस्नाफ़ व अक़्साम कुफ़्फ़ार यहूदो नसारा वग़ैरा को जो दुन्यवी साज़ो सामान दिया है मोमिन को चाहिये कि उस को इस्तिह़्सान व ए'जाब (तअ़ज्जुब व अच्छाई) की नज़र से न देखे। ह़सन رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने फ़रमाया कि ना फ़रमानों के तुम्तुराक़ (शानो शौकत, ठाट बाट) न देखो लेकिन येह देखो कि गुनाह और मा'सियत की ज़िल्लत किस त़रह़ उन की गरदनों से नुमूदार है। **204 :** इस त़रह़ कि जितनी उन पर ने'मत ज़ियादा हो उतनी ही उन की

www.dawateislami.net

بِالصَّلٰوةِ وَاصْطَبِرْ عَلَيْهَا ؕ لَا نَسْـَٔلُكَ رِزْقًا ؕ نَحْنُ نَرْزُقُكَ ؕ وَالْعَاقِبَةُ

को नमाज़ का हुक्म दे और ख़ुद इस पर साबित रह कुछ हम तुझ से रोज़ी नहीं मांगते[206] हम तुझे रोज़ी देंगे[207] और अन्जाम का भला

لِلتَّقْوٰى ﴿۱۳۲﴾ وَقَالُوْا لَوْلَا يَاْتِيْنَا بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ اَوَلَمْ تَاْتِهِمْ بَيِّنَةُ مَا

परहेज़ गारी के लिये और काफ़िर बोले येह[208] अपने रब के पास से कोई निशानी क्यूं नहीं लाते[209] और क्या उन्हें इस का बयान न आया जो

فِي الصُّحُفِ الْاُوْلٰى ﴿۱۳۳﴾ وَلَوْ اَنَّاۤ اَهْلَكْنٰهُمْ بِعَذَابٍ مِّنْ قَبْلِهٖ لَقَالُوْا

अगले सहीफ़ों में है[210] और अगर हम उन्हें किसी अ़ज़ाब से हलाक कर देते रसूल के आने से पहले तो[211] ज़रूर कहते

رَبَّنَا لَوْلَاۤ اَرْسَلْتَ اِلَيْنَا رَسُوْلًا فَنَتَّبِعَ اٰيٰتِكَ مِنْ قَبْلِ اَنْ نَّذِلَّ

ऐ हमारे रब तू ने हमारी त़रफ़ कोई रसूल क्यूं न भेजा कि हम तेरी आयतों पर चलते क़ब्ल इस के कि ज़लील

وَنَخْزٰى ﴿۱۳۴﴾ قُلْ كُلٌّ مُّتَرَبِّصٌ فَتَرَبَّصُوْا ۚ فَسَتَعْلَمُوْنَ مَنْ اَصْحٰبُ

व रुस्वा होते तुम फ़रमाओ सब राह देख रहे हैं[212] तो तुम भी राह देखो तो अब जान जाओगे[213] कि कौन हैं

الصِّرَاطِ السَّوِيِّ وَمَنِ اهْتَدٰى ﴿۱۳۵﴾ ع ۸ ۱۷

सीधी राह वाले और किस ने हिदायत पाई

सरकशी और उन का तुग़्यान बढ़े और वोह सज़ाए आख़िरत के सज़ावार हों। **205 :** या'नी जन्नत और उस की ने'मतें **206 :** और इस का मुकल्लफ़ नहीं करते कि हमारी ख़ल्क़ को रोज़ी दे या अपने नफ़्स और अपने अह्ल की रोज़ी का ज़िम्मेदार हो बल्कि **207 :** और उन्हें भी, तू रोज़ी के ग़म में न पड़, अपने दिल को अम्रे आख़िरत के लिये फ़ारिग़ रख कि जो **अल्लाह** के काम में होता है **अल्लाह** उस की कारसाज़ी करता है। **208 :** या'नी सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم **209 :** जो इन की सिह्ह़ते नुबुव्वत पर दलालत करे, बा वुजूदे कि आयाते कसीरा आ चुकी थीं और मो'जिज़ात का मुतवातिर ज़ुहूर हो रहा था फिर कुफ़्फ़ार उन सब से अन्धे बने और उन्हों ने हुज़ूर की निस्बत येह कह दिया कि आप अपने रब के पास से कोई निशानी क्यूं नहीं लाते ? इस के जवाब में **अल्लाह** तबारक व तआ़ला फ़रमाता है **: 210 :** या'नी क़ुरआन और सय्यिदे आ़लम की बिशारत और आप की नुबुव्वत व बि'सत का ज़िक्र, येह कैसी आ'ज़्म आयात हैं ! इन के होते हुए और किसी निशानी की त़लब करने का क्या मौक़अ़ है ! **211 :** रोज़े क़ियामत **212 :** हम भी और तुम भी। **शाने नुज़ूल :** मुश्रिकीन ने कहा था कि हम ज़माने के ह़वादिस और इन्क़िलाब का इन्तिज़ार करते हैं कि कब मुसल्मानों पर आएं और इन का क़िस्सा तमाम हो, इस पर येह आयत नाज़िल हुई और बताया गया कि तुम मुसल्मानों की तबाही व बरबादी का इन्तिज़ार कर रहे हो और मुसल्मान तुम्हारे उ़क़ूबत (अन्जाम) व अ़ज़ाब का इन्तिज़ार कर रहे हैं। **213 :** जब ख़ुदा का हुक्म आएगा और क़ियामत क़ाइम होगी।

www.dawateislami.net